केरल पाठावली

हिंदी

कक्षा X

KERALA READER

Hindi

Std X

केरल सरकार
सार्वजनिक शिक्षा विभाग
2025

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगान

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by:
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website: www.scertkerala.gov.in
e-mail: scertkerala@gmail.com
Phone: 0471-2341883, Fax: 0471-2341869
Printed at: KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of Education, Government of Kerala

प्रिय दोस्तो,

हिंदी भाषार्जन का सिलसिला केरल पाठ्यचर्या नवीकरण 2023 के पंखों में विस्तार पा रहा है । यह हिंदी भाषा को एक जीवंत माध्यम के रूप में सीखने का अवसर प्रदान करता है। समाज को जानने-पहचानने तथा उसे वांछित मोड़ देने की आपकी क्षमता को ध्यान में रखकर दसवीं कक्षा की यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है।

यह पाठ्यपुस्तक गतिविधि-आधारित शिक्षण पर बल देती है। आपको मिलजुल कर सीखने, विचारों का आदान-प्रदान करने तथा एक दूसरे को समझने का मौका मिलना है, यही हमारी अपेक्षा है। इससे उम्मीद है, आपमें हिंदी भाषा के प्रति रुचि पैदा हो जाए, आपके भाषा कौशल का विकास हो, आप संतुलित सफल जीवन जीने लायक बनें। आशा है, यह पाठ्यपुस्तक आपके लिए ज्ञानवर्धक भी लगे, रुचिकर भी लगे।

डॉ. जयप्रकाश. आर. के

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं

प्रशिक्षण परिषद्, केरल

TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM
Hindi - X

ADVISOR

Prof. (Dr.) S.R. Jayasree — Professor & Head, Department of Hindi, University of Kerala, Thiruvananthapuram

CHAIRPERSON

Dr. P. Ravi — Professor & Head (Rtd.), Dept. of Hindi, SSUS Kalady

EXPERTS

Dr. B. Asok — Professor & Head, Department of Hindi University College, Thiruvananthapuram

Dr. N.M. Sunny — Professor (Rtd.), Dept. of Hindi, Malabar Christian College, Calicut

MEMBERS

Dr. Mohamed Ashraf Alungal — Cheif Instructor (Rtd.), Govt. Regional Institute of Language Training, Thiruvananthapuram

Sreedharan Palayi — High School Teacher (Rtd.), Govt. HSS Peruvallur, Malappuram

V.K. Aboobacker — High School Teacher, SIHSS Ummathur, Kozhikkode

Sreela S Nair — High School Teacher, IKTHSS Cherukulamba, Malappuram

Vineesh. C.O — High School Teacher, Govt Model HSS, Calicut University Campus

Dr. Vijaya Lekshmi. L — High School Teacher, Govt. Central HS Attakulangara, Trivandrum

Dr. B. Sandhya — High School Teacher, Govt. HS Manjoor Manjoor South, Kottayam

Dr. Sindhumol. T — High School Teacher, Govt. VHSS Thidanad, Kottayam

Balakrishnan Kadirur — Art Teacher (Rtd.), Govt. HSS, Muppathadam, Aluva, Ernakulam

ACADEMIC CO-ORDINATOR

Deepa N Kumar
Research Officer, SCERT Kerala, Thiruvananthapuram

State Council of Educational Research and Training (SCERT), Kerala
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

अनुक्रमणिका

इकाई 1

खिड़की (लघुकथा) 9

ज़िंदगी का सफ़र (हाइकु) 14

रैन बसेरे में... (यात्रावृत्त) 17

इकाई 2

मेरी दुनिया के तमाम बच्चे (कविता) 29

व्हाइट कैंप (कहानी) 36

इकाई 3

दिल्ली में उनींदे (संस्मरण) 50

मधुर वचन (दोहे) 62

एक तिनका (कविता) 66

इकाई 4

गैलीलियो (लेख) 70

पैदल चलता हुआ आदमी (कविता) 78

इकाई 5

परी लड़की (कहानी) 84

सिला बीनती लड़कियाँ (कविता) 99

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

इकाई : एक

सफ़रों की जुगलबंदी

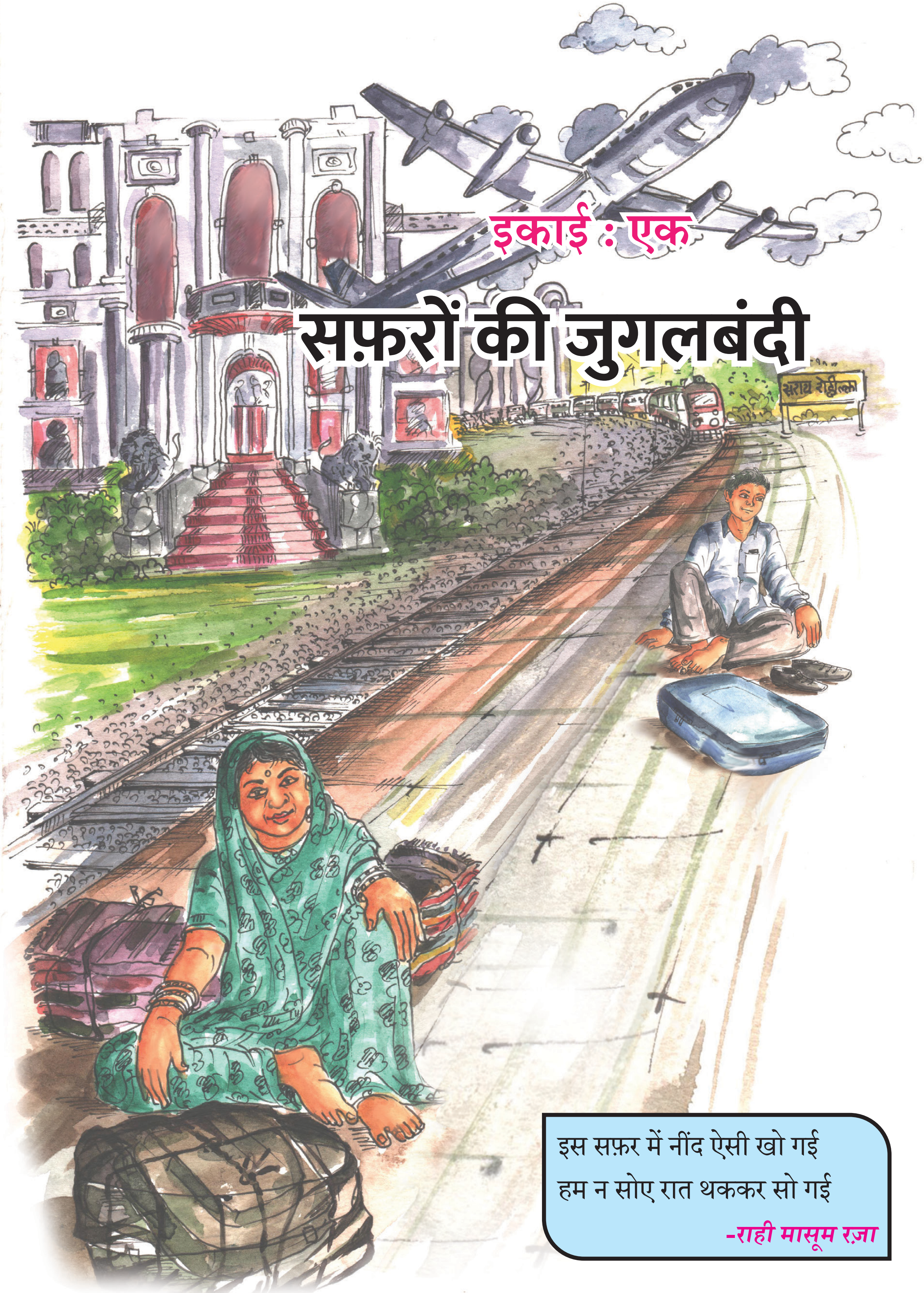

इस सफ़र में नींद ऐसी खो गई
हम न सोए रात थककर सो गई

-राही मासूम रज़ा

यह उद्घोषणा पढ़ें :

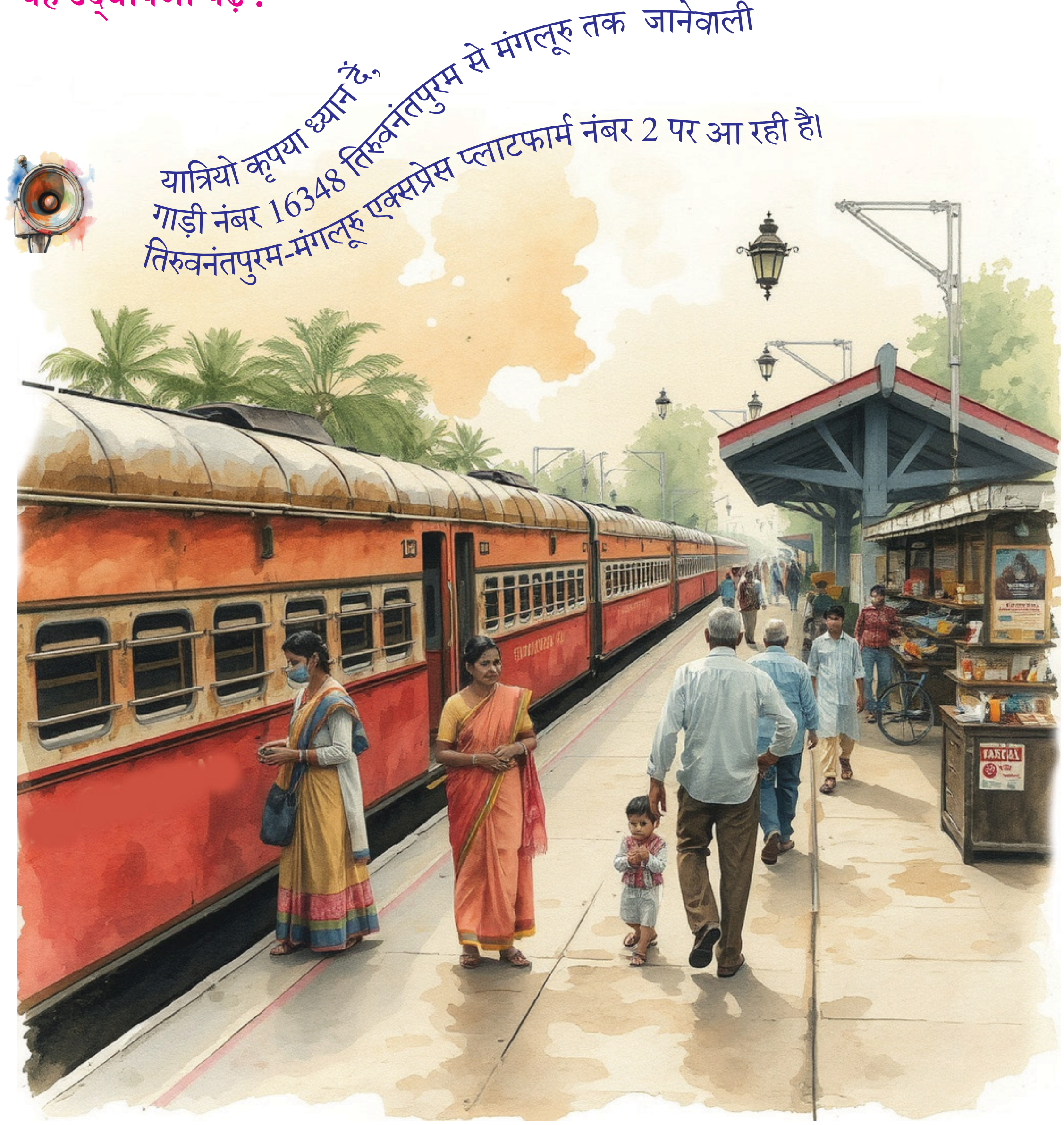

» **डिब्बे के अंदर के कार्यकलापों की कल्पना करें और अभिनय करके दिखाएँ।**

जैसे,

- चायवाला चाय बेच रहा है।
- ....
- ....
- ....

1

खिड़की

अंजू खरबंदा

लघुकथा

होशियारपुर से शादी का बुलावा आया था । ट्रेन से जाना तय हुआ। सर्दी हल्की हल्की दस्तक देने लगी थी, इसलिए सोचा– चलो इस बार ए सी के बजाय जनरल कोच से सफ़र का आनंद लिया जाए। पहले बीवी-बच्चे जनरल से जाने पर कुछ नाराज़ हुए, पर फिर थोड़ी ना-नुकुर के बाद मान गए। दिल्ली से लगभग आठ घंटे का सफ़र। सीट बुक थी, तो ज़्यादा परेशानी नहीं हुई। बच्चों ने झट खिड़की वाली सीट झपट ली। सारा सामान सेट कर मैं और पत्नी बातों में मशगूल हो गए।

ए सी के बजाय जनरल कोच से सफ़र का आनंद लेना– इसका मतलब क्या हो सकता है?

"दीदी! जम्मू की शॉल ले लो! बहुत बढ़िया है!"
रंग-बिरंगी शॉलों का भारी गठर उठाए एक साँवली-सलोनी कजरारी आँखों वाली युवती पत्नी को इसरार करने लगी।
"कितने की है?"
"अढ़ाई सौ की!"
"इत्ती महँगी!"
"ज़्यादा पीस लोगी, तो कम कर दूँगी!"
"मुझे दुकान खोलनी है क्या?"
"ले लो न! बहनों और भाभियों के लिए!"
मैंने पत्नी को इशारा किया, तो उसने आँखें तरेरकर मुझे चुप रहने का संकेत दिया।
"अच्छा पाँच पीस लूँ तो कितने के दोगी?"
"दो सौ रुपए पर पीस ले लेना दीदी!"
"न! सौ रुपए पर पीस!"
"दीदी! सौ तो बहुत कम है!" –कहते हुए उसका गला रुँध गया और उसकी कजरारी आँखें भर आईं।

»

युवती का गला रुँध जाने का कारण क्या हो सकता है?

"वो एक बार में ही डेढ़ सौ में मान गई। गलती की, थोड़ा तोल-मोल और करना चाहिए था!" –इस कथन से लोगों के किस मनोभाव का परिचय मिलता है?

"चल, न तेरी न मेरी, डेढ़ सौ पर पीस!"

"अच्छा दीदी! ठीक है! लो, रंग पसंद कर लो!"

कुछ सोचते हुए उसने कहा और गठर पत्नी के सामने सरका दिया। पत्नी ने पाँच शॉलें अलग कर लीं और मेरी ओर देख रुपए देने का इशारा किया।

मैंने झट 750 रुपए निकालकर दे दिए।

उसके जाने के बाद रास्ते भर पत्नी की सुई इसी बात पर अटकी रही– "वो एक बार में ही डेढ़ सौ में मान गई। गलती की, थोड़ा तोल-मोल और करना चाहिए था!"

और मेरी सुई... अतीत में जा अटकी थी ।

बेटी को गोद में बिठा रेलगाड़ी की खिड़की से झाँकता मैं सोच रहा था– मेरे पिता भी रेलगाड़ी में सामान बेच जब थके-हारे घर आते, तो उनकी आँखों में भी वही नमी थी, जो आज उस युवती की आँखों में थी।

"उनकी आँखों में भी वही नमी थी, जो आज उस युवती की आँखों में थी।" लेखक के पिताजी और उस युवती में कौन-सी समानता हो सकती है?

अंजू खरबंदा

जन्म : 31 अक्तूबर 1971

अंजू खरबंदा का जन्म दिल्ली में हुआ। वे अध्यापिका, लेखिका तथा रेडियो कलाकार हैं। लघुकथा, कविता, संस्मरण आदि विधाओं में वे कार्यरत हैं। 'उजली होती भोर', 'किंग्ज़वे कैम्प दिल्ली-9' आदि प्रकाशित कृतियाँ हैं। सावित्री बाई फूले सम्मान से वे पुरस्कृत हैं।

गतिविधियाँ

» कहानी पढ़ें और रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

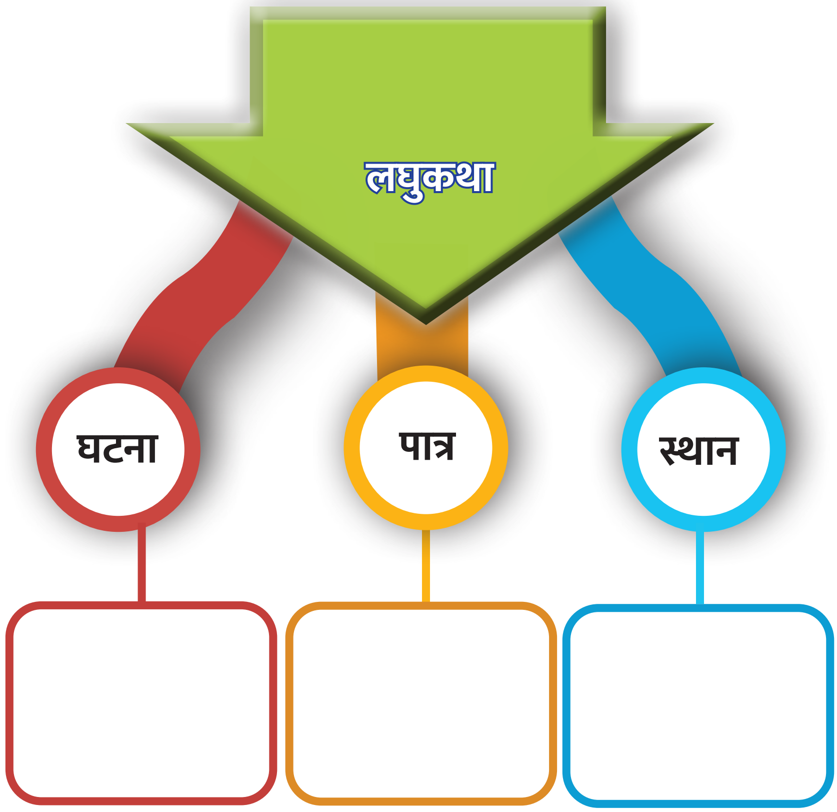

» नमूने के अनुसार वाक्यों को बदलकर लिखें :	
शादी का बुलावा **आया** ।	शादी का बुलावा **आया था** ।
पत्नी बातों में मशगूल हो **गई** ।	पत्नी बातों में मशगूल हो **गई थी** ।
....	लड़का बेंच पर बैठा था ।
....	मीनू बाज़ार की ओर चली थी ।
....	....
....	....

» रेलगाड़ी के अनुभव ने पति को अपने पिता की याद दिलाई। उसकी डायरी लिखें।

» कहानी की 'खिड़की' अनेक आशयों का सूचक है। समझाएँ।

» कहानी के लिए और एक शीर्षक सुझाएँ। उसका औचित्य भी बताएँ।

अनुबद्ध्ध कार्य

» कहानी का ऑडियो टेक्स्ट तैयार करें।

मदद लें :

बुलावा	-	निमंत्रण
सर्दी दस्तक देना	-	सर्दी का अनुभव होना
ना-नुकुर	-	असहमति
सीट झपट लेना	-	सीट पकड़ लेना
मशगूल होना	-	लीन होना
गठर	-	बड़ी गठरी, big bundle
साँवली	-	श्याम रंग की
सलोनी	-	सुंदर
कजरारी आँखें	-	काजल लगी आँखें
इसरार करना	-	आग्रह करना
अढ़ाई सौ	-	ढाई सौ (250)
इत्ती	-	इतनी
इशारा करना	-	संकेत करना
आँखें तरेरना	-	क्रोध से देखना
गला रुँध जाना	-	रोने को आना
सुई अटकना	-	ध्यान केंद्रित होना
खिड़की से झाँकना	-	खिड़की से बाहर देखना

2

हाइकु

जिंदगी का सफ़र

सूखा या बाढ़
साहब के आँगन
सदा फुहार

–सुरंगमा यादव

'साहब के आँगन / सदा फुहार' –यहाँ किस हालत की ओर इशारा किया गया है?

पिता ने ढूँढ़ीं
लाठियाँ बुढ़ापे की
दीखती नहीं

–डॉ. गोपाल बाबू शर्मा

'लाठियाँ बुढ़ापे की / दीखती नहीं' –इन पंक्तियों से क्या आशय मिलता है?

ढूँढ़ती रही
बर्फ़ीली नगरी में
नेह की आँच

–कमला निखुर्पा

'बर्फ़ीली नगरी में / नेह की आँच' –से क्या तात्पर्य है?

गतिविधियाँ

» 'ज़िंदगी की चुनौतियाँ' विषय पर टिप्पणी लिखें।

अनुबद्ध कार्य

» हाइकु संकलित करें।

मदद लें :

सूखा	-	വരൾച്ച, drought, வறட்சி, ಬರಗಾಲ
बाढ़	-	प्रलय
फुहार	-	छोटी बूंदें
बुढ़ापे की लाठी	-	वृद्धावस्था का आश्रय
बर्फ़ीली	-	बरफ़ से भरी हुई
नेह की आँच	-	स्नेह की गर्मी

डॉ. सुरंगमा यादव

जन्म : 19 जून 1970

डॉ. सुरंगमा यादव का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। 'यादों के पंछी', 'भाव प्रकोष्ठ', 'गाएगी सदी' आदि उनके प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं। 'रामधारी सिंह दिनकर पुरस्कार' से वे सम्मानित हैं।

डॉ.गोपाल बाबू शर्मा

जन्म : 04 दिसंबर 1932

डॉ. गोपाल बाबू शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ। वे श्री वार्ष्णेय पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अलीगढ़ के हिंदी विभाग में रीडर थे। 'सरहदों ने जब पुकारा', 'मोती कच्चे धागे में', 'काफ़िले रोशनी के', 'महके हरसिंगार' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

कमला निखुर्पा

जन्म : 05 दिसंबर 1967

कमला निखुर्पा का जन्म उत्तराखंड में हुआ। विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य संग्रहों में हाइकु, संस्मरण, कविताएँ आदि प्रकाशित हैं। संप्रति केंद्रीय विद्यालय में प्राचार्या हैं।

» इस खूबसूरत और विशाल दुनिया में सबसे पहले आप कहाँ जाना चाहेंगे ? क्यों ?

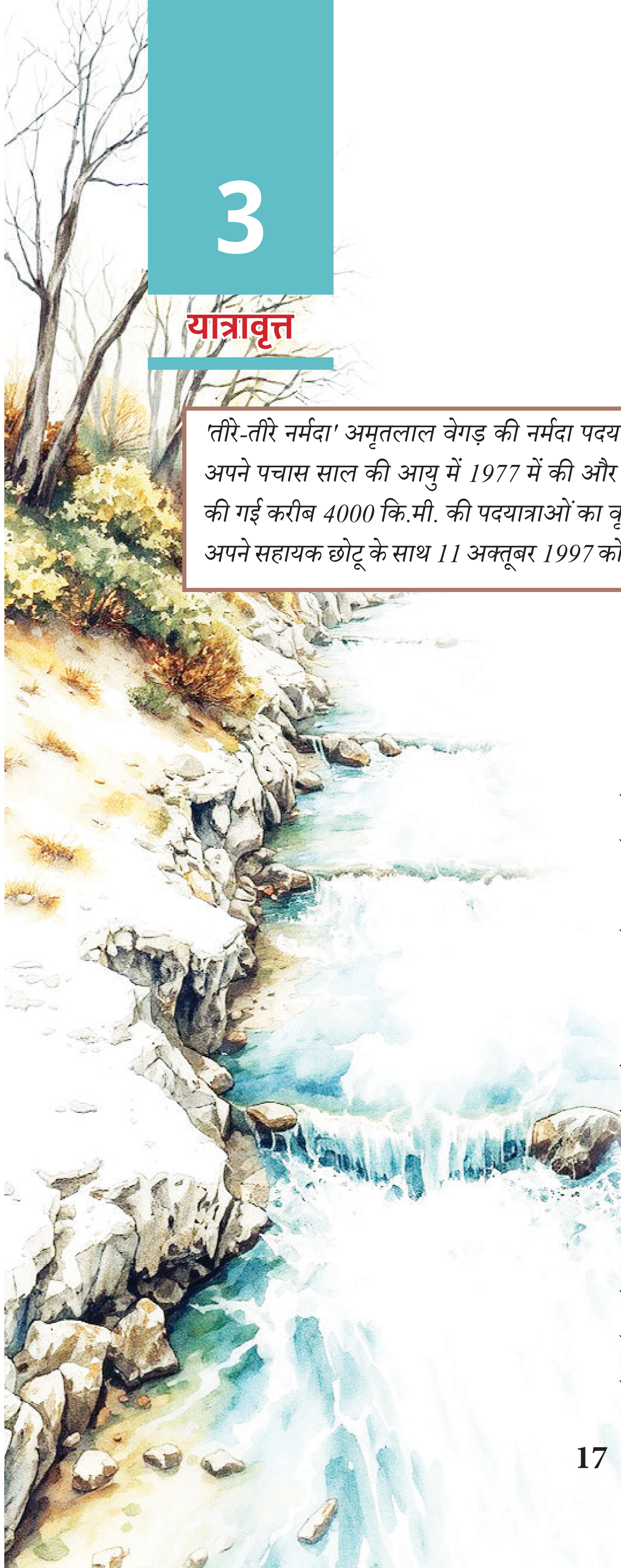

3

यात्रावृत्त

रैन बसेरे में...

अमृतलाल वेगड़

'तीरे-तीरे नर्मदा' अमृतलाल वेगड़ की नर्मदा पदयात्राओं का वृत्तांत है। प्रथम पदयात्रा उन्होंने अपने पचास साल की आयु में 1977 में की और अंतिम 2009 में। इन तैंतीस वर्षों के दौरान की गई करीब 4000 कि.मी. की पदयात्राओं का वृत्तांत है– 'तीरे-तीरे नर्मदा'। इस सिलसिले में अपने सहायक छोटू के साथ 11 अक्तूबर 1997 को की गई पदयात्रा के अनुभव यहाँ दिए गए हैं।

रात को थोड़ी देर के लिए मैं बाहर निकल आया और आकाश तले बैठ गया। तारे ऐसे लग रहे थे मानो किसीने आकाश में सफेद तिल बिखेर दिए हों। चाँद नहीं था इसलिए तारे खुलकर सामने आ गए थे।

सूरज चलता है अकेला, तारे चलते हैं जमात में। अमावस की रात को तारों का भंडारा भरता है। दिन का आकाश है हाउस ऑफ लॉर्ड, रात का आकाश है हाउस ऑफ कॉमन्स !

“दिन का आकाश है हाउस ऑफ लॉर्ड, रात का आकाश है हाउस ऑफ कॉमन्स!” –इससे आपने क्या समझा?

सुबह आगे बढ़े। पगडंडी एकाएक खतरनाक हो गई। ज़रा चूके और सीधे पानी में। पतली होते-होते वह लुप्त हो गई। खड़ी चढ़ाई चढ़कर मुश्किल से ऊपर आए। लेकिन ऊपर न गड़वाट थी, न पगडंडी और बादल थे कि हमें लगातार धमका रहे थे। वे सिमटकर घने काले मेघों में परिवर्तित हो रहे थे। कभी भी बरस सकते थे। कहीं एक आदमी तक नज़र नहीं आ रहा था। किसी तरह पथोड़ा पहुँचे। रोज़ की अपेक्षा आज हम आधा ही चल पाए थे, लेकिन पानी के डर से इसी गाँव में रुकना पड़ा।

कुछ लोगों ने मिलकर गाँव में एक मंदिर बनवाया है। अभी मूर्ति की स्थापना

नहीं हुई है। मंदिर के बरामदे में लोहे का जाली वाला दरवाज़ा है। मंदिर की देखरेख करने वाले ग्रामीण ने उसे हमारे लिए खोल दिया। आज यही बरामदा हमारा रैन बसेरा है। पानी लाने के लिए बाल्टी दी। फ़र्श पर बिछाने के लिए एक बहुत बड़ी दरी दी और सदाव्रत के लिए भी पूछा, लेकिन वह हमारे पास पर्याप्त था।

छोटू बाहर खाना बना रहा था। दाल तो बन गई थी पर वह गाकड़ बना रहा था कि पानी आ गया। प्रायः सभी खेतों में या तो सोयाबीन कट रहा है या कटे हुए सोयाबीन के ढेर लगे हैं। इस पानी से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है।

"इस पानी से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है।" —क्यों?

किसी तरह छोटू ने गाकड़ बना लिए। खाना खाकर, थोड़ा आराम करके जब सोने लगे, तब तक पानी बंद हो चुका था। बाहर बिजली का बल्ब जल रहा था।

रात को जब मैं उठा तो मेरे पैरों के पास की खाली दरी पर एक आदमी गुड़ीमुड़ी पड़ा था। उसने कुछ भी ओढ़ा नहीं था। लेटे-लेटे बड़बड़ा रहा था। मानो कहानी सुना रहा हो। फिर एकाएक ज़ोरों से हँसने लगता। बीच-बीच में रामायण की चौपाई बोलता। शायद पागल था। मैं चुपचाप सो गया।

थोड़ी देर के बाद वह उठकर बाहर चला गया। लेकिन जल्दी ही वापस आया। दरवाज़े पर खड़ा होकर गुर्राया, "कौन हो तुम लोग ? यहाँ कैसे घुस आए हो?" निरीह से दिखने वाले इस आदमी ने एकाएक विकराल रूप धारण कर लिया। अब वह बेहद गुस्से में था।

हमने कोई जवाब नहीं दिया। वह ज़ोर से चीखा। हम लोग उठ बैठे। मैंने कहा, "जिन्होंने यह मंदिर बनवाया है, उन्होंने हमें यहाँ ठहराया है। देखिए, यह दरी और यह बाल्टी भी उन्होंने ही दी हैं।"

लेकिन वह पागल जो था, ऊलजलूल बकने लगा। अपने आपको सी.आई.डी. इन्स्पेक्टर बताने लगा। "क्या समझते हो, मैं सादे भेष में रहकर चोरों का पता लगाता हूँ।" उसके सवाल बेसिर-पैर के थे। जवाब न देते तो चाबुक से मारने की धमकी देता। इसलिए मैं कोई न कोई जवाब देता रहा। वह लगातार चीखता-चिल्लाता रहा। बीच-बीच में हवा में ऐसे हाथ घुमाता, मानो हाथ में कोड़ा हो। जब उसकी नाराज़गी बढ़ जाती, तब उसका चेहरा क्रोध से विकृत हो उठता। मैंने अपने आपको कभी इतना असहाय अनुभव नहीं किया था। लाचार हम उसकी धौंस सहते रहे। पास-पड़ोस में कई घर थे। हमारी सहायता के लिए क्यों कोई आ

नहीं रहा? क्या कोई समझता नहीं कि हमारे साथ क्या हो रहा है? ऐसा लगता था मानो यह रात कभी खत्म ही नहीं होगी।

> *"ऐसा लगता था मानो यह रात कभी खत्म ही नहीं होगी।" –लेखक को क्यों ऐसा लगता था?*

तभी उसका ध्यान कोने में रखे हमारे सामान की ओर गया। " इसमें क्या है? मुझे इसकी तलाशी लेनी होगी।"

मुझे चिंता हुई। उसमें सब्जी काटने का चाकू भी था। कहीं वह उसके हाथ लग गया तो ? मेरे भीतर भय की एक हिलोर-सी उठी।

उसने हमारा पिट्ठू खोला। एक-एक चीज़ निकालकर फेंकने लगा। मैं दम साधे उसकी हर गतिविधि को देखता रहा। डेटॉल की शीशी फर्श पर दे मारी। एक-एक चीज़ निकालकर फेंक दी। यहाँ तक कि चाकू भी फेंक दिया। अंत में दो-तीन किताबें निकालीं। किताबें उसने खोलकर देखीं, फिर ज्यों की त्यों वापस रख दीं। हमारी ओर मुड़कर छोटू से बोला, "बॉट इज युअर नेम?"

> *"किताबें उसने खोलकर देखीं, फिर ज्यों की त्यों वापस रख दीं।" –यहाँ अपरिचित व्यक्ति का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?*

छोटू ने सहमते हुए कहा, "मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती।"

मुझसे पूछा, "तुम क्या करते हो?"

मैंने कहा, "मैं शिक्षक था, बच्चों को पढ़ाता था, अब रिटायर हो गया हूँ।" मेरी आवाज़ स्थिर थी लेकिन अंदर ही अंदर मैं डरा हुआ था। वह चुप रहा, मानो कहीं खो गया हो। मानो कुछ याद कर रहा हो। मानो उसके भीतर कुछ आलोड़ित हो रहा हो। कुछ क्षण तक मुझे एकटक देखते रहने के बाद बोला, "अच्छा, सो जाओ।" मैं सिर से लेकर पाँव तक ओढ़कर सो गया। सोचा शायद अब वह चला जाए।

तभी एक विचित्र घटना घटी। अचानक उसने मेरे पैर दबाने शुरू कर दिए। उसके मज़बूत हाथों का स्पर्श अनुभव करते ही मैं काँप-सा गया। एक-एक करके दोनों पैर खूब अच्छी तरह से दबाए। उसमें बड़ी ताकत थी। फिर हाथ दबाए। हाथों की एक-एक ऊँगली दबाई। हर घड़ी चिंता बनी रही कि कहीं कोई उँगली चटका न दे। इसके बाद उसने मेरी मुट्ठी खोली, उसमें कुछ रखा, मुट्ठी बंद की और चला गया। उसके जाते ही छोटू ने दरवाज़ा अंदर से बंद करके उसपर ताला लगा दिया। हमने राहत की साँस ली।

लेकिन नींद नहीं आई। मैं जागता पड़ा रहा और सोचता रहा कि उसमें एकाएक बदलाव क्यों कर आया। वह उद्‌दंड से विनम्र कैसे बन गया ?

मुट्‌ठी खोलकर देखा तो उसमें बीस पैसे का सिक्का था।

धीरे-धीरे गुत्थी सुलझने लगी। किताबों को उसने फेंका नहीं था। किताबें देखकर अनजाने ही उसके मन में यह बात आई होगी कि ये शायद लिखने-पढ़ने वाले आदमी हैं, शायद गुरु हैं। उस विक्षिप्त अवस्था में भी उसके अवचेतन में यह संस्कार दबा पड़ा था कि गुरु का तो आदर करना चाहिए। और यह मालूम होने पर कि मैं शिक्षक हूँ, उसका व्यवहार एकाएक बदल गया। उसकी विक्षिप्तावस्था पर उसके संस्कारों ने बढ़त पा ली थी।

> *"गुत्थी सुलझने लगी" –से आपने क्या समझा?*

शिक्षक दिवस के अवसर पर पूरे देश में अनगिनत शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। मेरे शहर में मेरा भी कई बार सम्मान हो चुका है। लेकिन उस रात को, भय और आतंक के साये में ही सही, मुझे जो सम्मान मिला, वह अपूर्व था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक शिक्षक के रूप में मेरा सर्वश्रेष्ठ सम्मान इस प्रकार होगा। इसके बाद मुझे कच्ची-सी नींद पड़ गई।

> *लेखक भय और आतंक की उस रात को मिला सम्मान अपूर्व मानते हैं। क्यों?*

सबेरा हुआ। बिखरे सामान को फिर से पिट्ठू में जमाते हुए छोटू ने कहा, "उसने हमारी कानी कौड़ी तक नहीं ली।" दरवाज़ा खोलकर हम बाहर आए। पड़ोस के युवक से कहा, "रात को एक पागल ने हमें बहुत परेशान किया। घंटे-डेढ़ घंटे तक हमें डराता-धमकाता रहा। वह हमें पीट भी सकता था।"

"वे मेरे पिता हैं। पागलपन का दौरा पड़ता है, तभी ऐसी हरकतें करते हैं। पर किसीको मारते नहीं। वैसे वे यहाँ नहीं रहते, मंडीदीप में मेरे भाइयों के पास रहते हैं। कल रात को ही आए हैं।"

"हमारी मदद के लिए तुम आए क्यों नहीं?"

"मैं खेत पर सोया था। सोयाबीन कट रहा है। अभी आया हूँ। आपके यहाँ से आने के बाद वे चबूतरे चले गए। अभी वहीं हैं।"

हमारा रास्ता चबूतरे से होकर जाता था। हम वहाँ से निकले तो वह वहाँ खड़ा मिला। हमने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। तभी नीचे उतरकर, घुटनों के बल झुककर, उसने मेरे पाँव छुए। "गुरुदेव! बहुत शर्मिंदा हूँ। क्या करता, दौरा जो पड़ा था।" उसके चेहरे पर पछतावा था, आँखों में आँसू।

मैंने कहा, "भाई, तुम नहीं जानते कि तुमने गुरुओं का कितना मान बढ़ाया है– किसी एक गुरु का नहीं, तमाम गुरुओं का।"

इसके साथ ही हम आगे बढ़ लिए। और हाँ, वह सिक्का आज भी मेरे पास है।

गतिविधियाँ

» **सही प्रस्ताव चुनकर लिखें :**

» अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा के किनारे पदयात्रा की।

» बारिश होने से यात्रियों को पथोड़ा गाँव में ही रुकना पड़ा।

» लेखक और सहायक मंदिर की छत पर सो गए।

» छोटू ने गाँववालों के लिए खाना पकाया।

» नींद खुलते ही लेखक ने एक स्त्री को अपने पास बैठे देखा।

» पागल आदमी ने चाबुक से यात्रियों को मारा।

» पागल आदमी ने पिट्ठू से किताबें निकालकर फेंक दीं।

» पागल आदमी लेखक के पैर दबाता रहा।

» लेखक के हाथ में बीस पैसे का सिक्का रखकर पागल आदमी चला गया।

» पागल आदमी छोटू को भी साथ ले गया।

» **पात्रों की विशेषताएँ पहचानें :**

» इस यात्रावृत्त के प्रसंग में कौन-कौन आपके सामने आते हैं? उनकी विशेषताएँ क्या-क्या हैं? तालिका में लिखें।

पात्र	भूमिका	विशेषताएँ

» **अर्थ ढूँढ़ें :**

» यात्रावृत्त में इन मुहावरों का प्रयोग कहाँ हुआ है? वहाँ प्रत्येक मुहावरे का क्या अर्थ मिलता है?

- ऊलजलूल बकना
- बेसिर-पैर का सवाल करना
- धौंस सहना
- गुत्थी सुलझना

» **विशेषण शब्दों को पहचानें :**

» यात्रावृत्त में विशेषण शब्द युक्त वाक्यों का बहुत प्रयोग हुआ है। ऐसे वाक्य चुनकर लिखें और विशेषण शब्दों को रेखांकित करें।

जैसे :

- मुझे जो सम्मान मिला, वह **अपूर्व** था।
- तभी एक **विचित्र** घटना घटी।

» **बातचीत लिखें :**

» अपरिचित व्यक्ति के जाते ही छोटू ने दरवाज़ा बंद करके उसपर ताला लगा दिया। इस प्रसंग पर छोटू और लेखक के बीच की बातचीत लिखें।

» **मनपसंद प्रसंग यात्रावृत्त से चुनें। उस प्रसंग पर पटकथा का एक दृश्य लिखें और अभिनय करें।**

अनुबद्‌ध कार्य

» **अपनी किसी यात्रा का विवरण लिखें। कक्षा में सबके विवरणों को जोड़कर 'यात्रावृत्त संकलन' प्रकाशित करें।**

अमृतलाल वेगड़

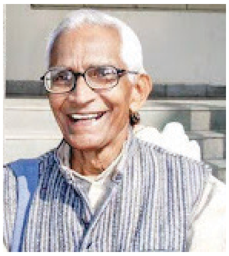

जन्म : 3 अक्तूबर 1928
मृत्यु : 6 जुलाई 2018

अमृतलाल वेगड़ का जन्म मध्य प्रदेश में हुआ। उन्होंने 1948 से 1953 तक शांतिनिकेतन में कला का अध्ययन किया। वे नर्मदा-व्रती चित्रकार और लेखक हैं। मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान, केंद्र सरकार द्वारा महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान आदि से वे पुरस्कृत हैं। सौंदर्य की नदी नर्मदा, अमृतस्य नर्मदा, तीरे-तीरे नर्मदा आदि उनकी प्रसिद्‌ध रचनाएँ हैं।

मदद लें :

तिल - എള്ള്, sesame seed, எள், ಎಳ್ಳು

बिखेरना - വിതറുക, to sprinkle, . சிதறுதல், ಅಪಾಯಕಾರಿ

जमात - दल

भंडारा - समूह

पगडंडी - ഒറ്റയടിപ്പാത, narrow pathway, ஒற்றை அடிப்பாதை, ಕಾಲುದಾರಿ

खतरनाक - അപകടകരം, Dangerous , ஆபத்தானது, ಅಪಾಯಕಾರಿ

चूक - गलती

पतला - നേർത്ത, thin, மெல்லிய, ಸಪೂರವಾದ

चढ़ाई - കയറ്റം, an upward slope, ஏற்றம், ಏರಿಕೆ

धमकाना - डराना

सिमटना - ഉരുണ്ടുകൂടുക, gather around,திரள்தல், ಸುರುಟಿಕೊಳ್ಳು

जाली वाला - അഴികളുള്ള, with rails, வலைத்தட்டி உள்ள, ಸರಳುಗಳಿರುವ

देखरेख - संरक्षण

रैन बसेरा - रात बिताने का स्थान

दरी - मोटे सूत का बिछावन

सदाव्रत - यात्रियों को बिना मूल्य ज़रूरी वस्तुएँ देने की व्यवस्था

गाकड़ - गेहूँ के आटे से बना खाद्य पदार्थ जो रोटी से थोड़ा छोटा होता है।

ओढ़ना - പുതയ്ക്കുക, to cover, மூடுதல், ಹೊದೆಯು

चौपाई - चौपाई छंद की पंक्तियाँ

निरीह - निर्दोष

बेहद - बहुत अधिक

ऊलजलूल बकना - बेकार की बातें कहना

चाबुक - ചാട്ടവാർ, whip, சாட்டை, ಚಾಟಿ

धमकी - ഭീഷണി, threat, அச்சுறுத்தல், ಬೆದರಿಸು

कोड़ा - चाबुक

नाराज़गी - क्रोध

लाचार - असहाय

धौंस - धमकी

तलाशी - പരിശോധന, search, பரிசோதனை, ಹುಡುಕಾಟ

चाकू - കത്തി, knife, கத்தி, ಚೂರಿ

पिट्ठू - പെട്ടി, box, பெட்டி, ಪೆಟ್ಟಿಗೆ

दम साधना - साँस रोकना

आलोड़न - सोच-विचार

ताकत - शक्ति

चटकाना - तोड़ना

उद्दंड - उग्र, किसीका कहना न मानने वाला

सिक्का - നാണയം, coin, நாணயம், ನಾಣ್ಯ

गुत्थी - समस्या

विक्षिप्त - पागल

अवचेतन - ഉപബോധം, sub conscious, ஆழ்மனம், ಉಪಪ್ರಜ್ಞೆ

सम्मान - आदर

कानी कौड़ी - ചില്ലിക്കാശ്, pennies, துச்சமான பைசா, ಚಿಲ್ಲರೆ ಹಣ

शर्मिंदा - लज्जित

पछतावा - पश्चाताप

इकाई : दो

उम्मीद की दुनिया

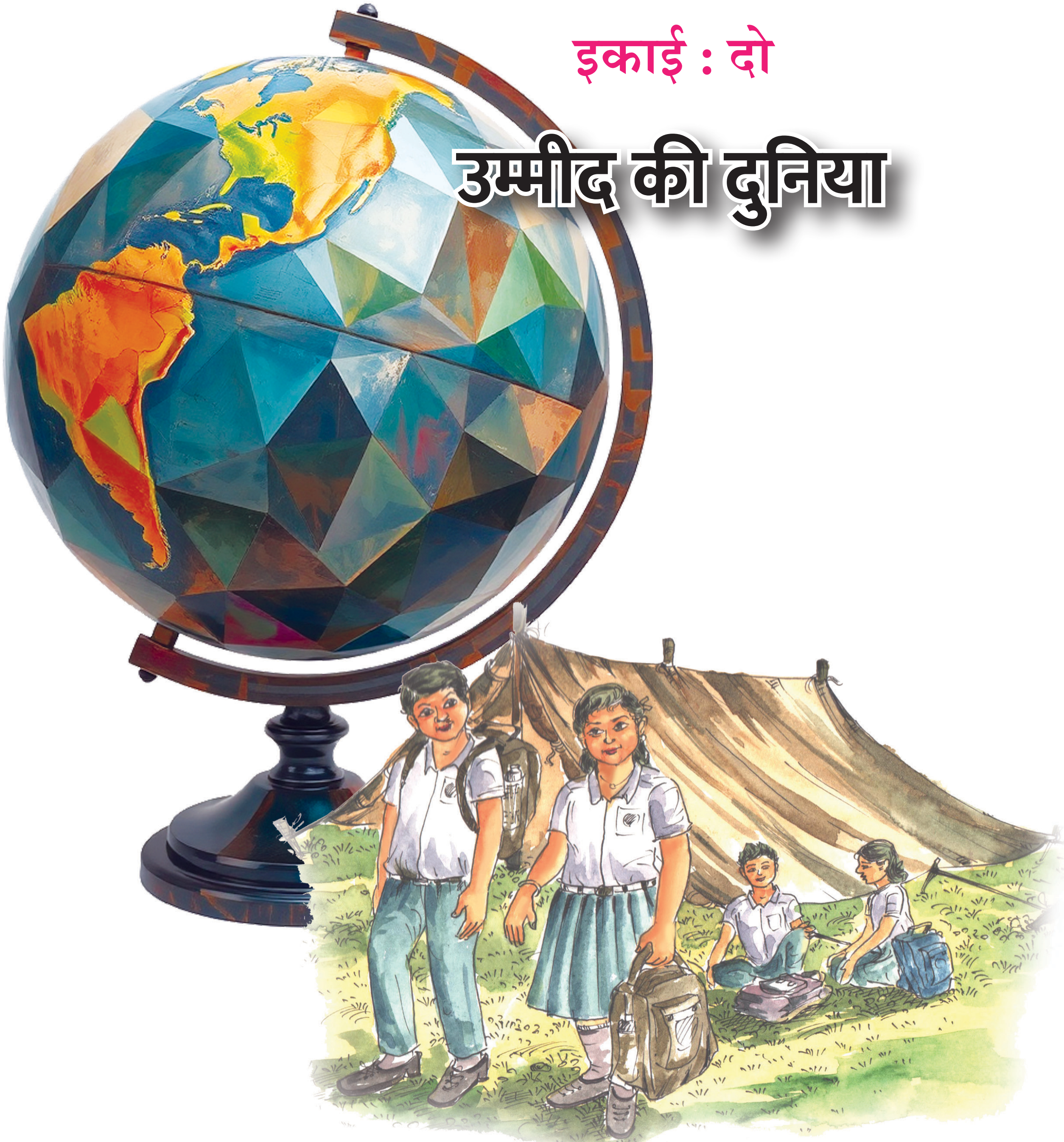

सपना रे सपना, है कोई अपना
अँखियों में आ भर जाऽ ना

-गुलज़ार

अपना देश आपको क्यों प्रिय है?

- अपने विचार कक्षा में साझा करें।

1

कविता

मेरी दुनिया के तमाम बच्चे

अदनान कफ़ील 'दरवेश'

वो जमा होंगे एक दिन
और खेलेंगे एक साथ मिलकर
वो साफ़-सुथरी दीवारों पर
पेंसिल की नोक रगड़ेंगे
वो कुत्तों से बतियाएँगे
और बकरियों से
और हरे टिड्डों से
और चींटियों से भी

वो दौड़ेंगे बेतहाशा
हवा और धूप की मुसलसल निगरानी में
और धरती धीरे-धीरे
और फैलती चली जाएगी
उनके पैरों के पास...

'वो जमा होंगे एक दिन' –यहाँ किस उम्मीद की ओर संकेत है?

बच्चों द्वारा टैंकों में बालू भरने और बंदूकों को मिट्टी में गाड़ देने का क्या तात्पर्य है?

'दीवारों में छेद कर आरपार देखना' –यहाँ किसकी ओर संकेत है?

देखना!
वो तुम्हारी टैंकों में बालू भर देंगे एक दिन
और तुम्हारी बंदूकों को
मिट्टी में गहरा दबा देंगे
वो सड़कों पर गड्ढे खोदेंगे
और पानी भर देंगे
और पानियों में छपा-छप लोटेंगे

वो प्यार करेंगे एक दिन उन सबसे
जिनसे तुमने उन्हें नफ़रत करना सिखाया है

वो तुम्हारी दीवारों में
छेद कर देंगे एक दिन
और आर-पार देखने की कोशिश करेंगे
वो सहसा चीखेंगे!
और कहेंगे–
"देखो! उस पार भी मौसम तो हमारे यहाँ जैसा ही है"

वो हवा और धूप को अपने गालों के गिर्द
महसूस करना चाहेंगे
और तुम उस दिन उन्हें
नहीं रोक पाओगे

एक दिन तुम्हारे महफ़ूज़ घरों से बच्चे
बाहर निकल आएँगे
और पेड़ों पे घोंसले बनाएँगे
उन्हें गिलहरियाँ काफ़ी पसंद हैं
वो उनके साथ ही बड़ा होना चाहेंगे

तुम देखोगे
जब वो हर चीज़ उलट-पुलट देंगे
उसे और सुंदर बनाने के लिए

एक दिन मेरी दुनिया के तमाम बच्चे
चींटियों, कीटों
नदियों, पहाड़ों, समुद्रों
और तमाम वनस्पतियों के साथ
मिलकर धावा बोलेंगे
और तुम्हारी बनाई हर चीज़ को
खिलौना बना देंगे।

'तुम्हारी बनाई हर चीज़ को खिलौना बना देंगे' –से क्या तात्पर्य है?

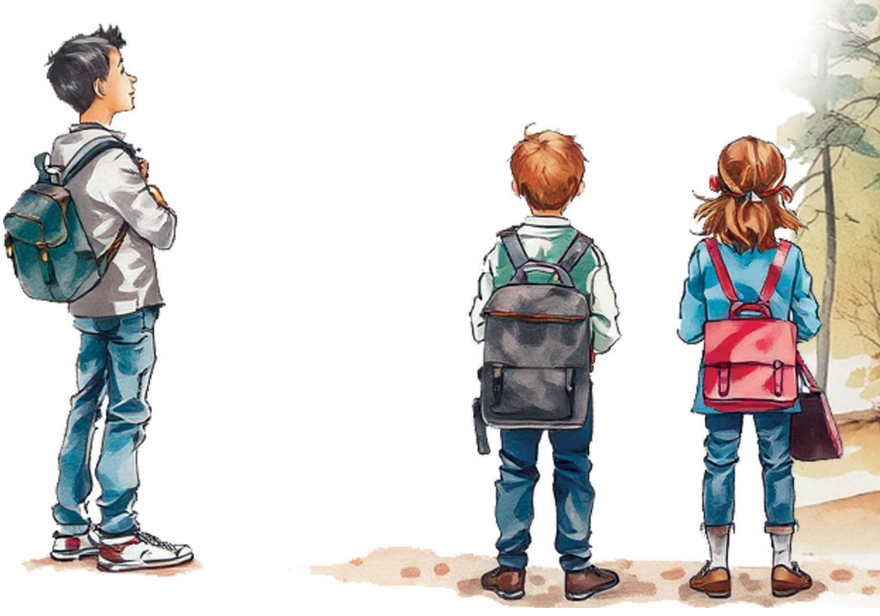

गतिविधियाँ

» **कविता पढ़ें और इन प्रश्नों पर विचार करें :**

- यह कविता किसके संबंध में है?
- कविता में 'वो' का प्रयोग किस संदर्भ में है?
- कविता के बच्चे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं?
- कविता में 'तुम' किन-किनकी ओर इशारा करता है?

» **कवि ने कविता में कई छवियों को उकेरा है। ऐसी छवियाँ कविता से ढूँढ़ें।**

जैसे :

वो जमा होंगे एक दिन
और खेलेंगे एक साथ मिलकर

» **इस मुहावरे का मतलब क्या है :**

- धावा बोलना

» **कविता के इन प्रयोगों से आपने क्या समझा?**

- पेंसिल की नोक रगड़ना
- कुत्तों से बतियाना
- टैंकों में बालू भरना
- पेड़ों पर घोंसला बनाना

» **ढूँढ़ें, लिखें :**

- कौन-सी पंक्ति सार्वलौकिक भावना की ओर इशारा करती है?

» **कविता के क्रिया पदों की सूची बनाएँ :**

जैसे :

- **जमा होंगे**
- **जाएगी**
- **बतियाएँगे ...**

- यहाँ क्रिया के किस काल की सूचना है?

» **अनुभव बताएँ :**

- कविता की कौन-सी पंक्तियाँ आपको ज़्यादा अच्छी लगीं और क्यों?
- कविता किस प्रकार की दुनिया की कल्पना करती है?
- कविता के संदेश से आप कहाँ तक सहमत हैं?

» **आस्वादन टिप्पणी लिखें :**

- "मेरी दुनिया के तमाम बच्चे" कविता की विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।

ध्यान दें, आपकी टिप्पणी में :

- कवि और कविता का परिचय हो।
- कविता के केंद्रीय विषय का उल्लेख हो।
- कविता की विशेषता का उल्लेख हो।
- अपनी राय व कविता की प्रासंगिकता का उल्लेख हो।
- स्पष्ट और संक्षिप्त भाषा में लिखी हो।
- उचित शीर्षक दिया हो।

अनुबद्ध कार्य

» **कवितापाठ करें और उसका ऑडियो टेक्स्ट तैयार करें।**

अदनान कफ़ील 'दरवेश'

जन्म : 30 जुलाई 1994

अदनान कफ़ील 'दरवेश' का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। हिंदी की लगभग सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं तथा वेब ब्लॉग्स पर उनकी कविताएँ प्रमुखता से प्रकाशित एवं प्रशंसित हैं। 'ठिठुरते लैंप पोस्ट', 'नीली बयाज़' आदि उनके प्रमुख कविता संग्रह हैं। वे 'भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार', 'रविशंकर उपाध्याय स्मृति कविता पुरस्कार', 'वेणुगोपाल स्मृति कविता पुरस्कार' आदि से सम्मानित हैं।

मदद लें :

तमाम - सारा

जमा होना - एकत्र होना

साफ़-सुथरी - स्वच्छ

नोक - अग्र भाग

रगड़ना - ഉരയ്ക്കുക, **to scrape**, தேய்த்தல், ಒರಸುವುದು

बतियाना - बात करना

टिड्डे - പച്ചത്തുള്ളൻ, grasshopper, வெட்டுக்கிளி, ಮಿಡತೆ

बेतहाशा दौड़ना - ഓടിത്തിമിർക്കുക, **to run rejoicingly**, மகிழ்ச்சியுடன் ஓடினான், ಹುಚ್ಚು ಹುಚ್ಚಾಗಿ ಓಡು

मुसलसल - निरंतर

निगरानी - निरीक्षण

बालू - रेत, മണൽ, sand, மண், ಮರಳು

बंदूक - തോക്ക്, gun, துப்பாக்கி, ಬಂದೂಕು

गहरा - ആഴമുള്ള, deep, ஆழமான, ಆಳವಾದ

दबाना - അമർത്തുക, to press down, அழுத்தவும், ಒತ್ತುವುದು

गड्ढा - കുഴി, pit, குழி, ಹೊಂಡ

खोदना - കുഴിക്കുക, to dig, தோண்டுதல், ಅಗೆಯಲು

छपाछप - पानी पर हाथ मारने की आवाज़

लोटना - ഉരുളുക, roll over, உருட்டவும், ಉರುಳಿಸು

नफ़रत - घृणा

छेद करना - സുഷിരമുണ്ടാക്കുക, make a hole, ஒரு துளை செய்யுங்கள், ರಂಧ್ರವನ್ನು ಮಾಡಿ

आर-पार - दोनों तरफ़

कोशिश - परिश्रम

सहसा - अचानक

चीखना - खुशी से शोर मचाना

मौसम - ऋतु

गाल - കവിൾത്തടം, Cheek, கன்னம், ಕೆನ್ನೆ

के गिर्द - चारों ओर

महसूस करना - अनुभव करना

महफ़ूज़ - सुरक्षित

उलटना-पुलटना - परिवर्तन करना

वनस्पति - पेड़-पौधे

धावा बोलना - हमला करना

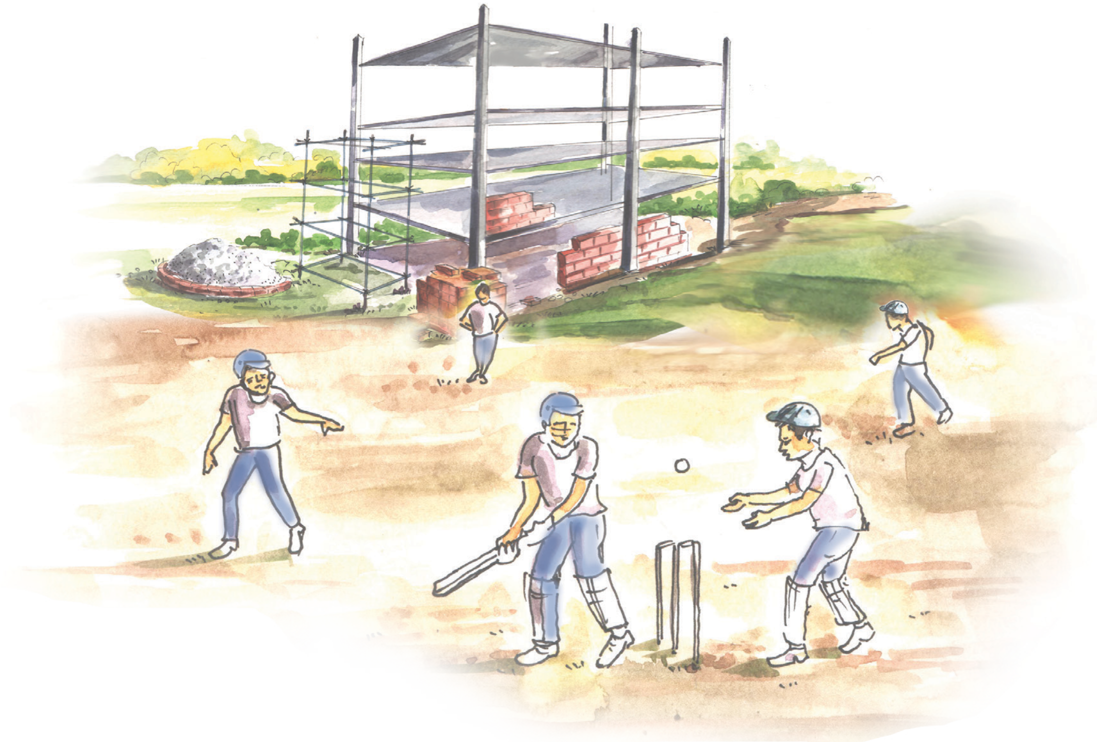

» चित्र देखें और बताएँ, लड़का अकेले क्यों बैठा होगा?

2

कहानी

व्हाइट कैप

लोकबाबू

नई बसाहटों के कारण हर साल शहर की शक्ल बदल जाती थी। निर्माणाधीन इमारतों में काम करने वाले मज़दूरों का गाँव इतनी दूर था कि वे रोज़ वहाँ लौट नहीं सकते थे। ऐसे मज़दूर निर्माणाधीन इमारतों के आस-पास ही किसी कोने में अपनी गठरियाँ रखकर, चूल्हा सुलगाकर, भोजन बनाते, खाते और रात गुज़ारते रहते।

» यहाँ शहर के विकास और मजदूरों के जीवन के बीच की कौन-सी स्थिति दिखाई देती है?

इन्हीं मज़दूर-पहरेदारों में एक परिवार केशव का भी था। केशव आठ साल का छोटा-सा, नाटा-सा, साँवला-सा लड़का था। उसके माता-पिता, बेमेतरा ज़िले के किसी गाँव से यहाँ पहुँचे थे।

फरवरी माह के अंत में, जब गर्मी अपने पाँव पसारने लगी थी, तीसरी कक्षा की अपनी वार्षिक परीक्षा दे चुकने के बाद केशव अपने दादाजी से माता-पिता के पास शहर जाने की ज़िद कर बैठा। बुढ़ापे में बचा-खुचा दिमाग जब पोते ने कुतरना शुरू किया तो हताश

उसके दादाजी ने उसे बस में बिठाकर यहाँ उसके माता-पिता के पास ला छोड़ा।

यहाँ आकर केशव दिन-भर के लिए परिवार के अस्थायी डेरे में अकेले पड़े रहने को मजबूर था। आखिर कुछ दिनों अकुलाते पड़े रहने के बाद केशव उस डेरे से बाहर निकला। आस-पास की दूसरी कॉलोनियों के उसने चक्कर लगाए, फिर एक कॉलोनी के पास लड़कों को क्रिकेट खेलता देखकर ठहर गया। वह दूर एक नीम के पेड़ के नीचे छाया में बैठ गया। बाकी लड़के निश्चिंत होकर क्रिकेट खेलते रहे।

» यहाँ केशव के व्यक्तित्व की क्या-क्या विशेषताएँ उभर आती हैं?

केशव अब रोज़ दिन में लड़कों का खेल देखने उधर आने लगा। नीम के नीचे बैठे अपना खेल देख रहे केशव को, लड़कों ने कुछ दिनों अपने खेल में तो शामिल नहीं किया, मगर उसे अपनी हँसी-मज़ाक का विषय ज़रूर बना लिया था। खेल में आउट होकर आए और पहले से नीम के नीचे आकर बैठे लड़के बीच-बीच में उसकी खोपड़ी पर तबला बजाते। कभी मज़ाक में सिर पर हाथ भी जमा देते, तो भी केशव मुस्कुराता रहता। कुछ बड़े लड़के सहानुभूति जताते–

"उसकी खोपड़ी के पीछे मत पड़ो यार, दुखता होगा!"

कुछ दिनों में वह लड़कों के खेल की ज़रूरत भी बन गया था। किसी लड़के के समय पर न पहुँचने पर वे केशव को उसके घर बुलवाने भेजने लगे। केशव उचक-उचककर अपने नन्हे हाथों से उस लड़के के घर की ऊँची कॉलबेल बजाता। लड़का खुद प्रकट हुआ तो ठीक, यदि उसके घरवाले निकल आते तो केशव को देखकर अपने लड़के को खेलने न भेजने का उनका इरादा और पक्का हो जाता–

"गुल्लू आज खेलने नहीं जाएगा। पढ़ाई करेगा। तुम भागो यहाँ से!"

"आंटी, उसके दोस्त बुला रहे हैं।" केशव मासूमियत से कहता।

"तुमको भागने बोला है, फिर भी खड़े हो! लगाऊँ क्या दो झापड़ ?"

» *गुल्लू को खेलने न भेजने के घरवालों के इरादे पर आपका विचार क्या है?*

तब खिलाड़ी की कमी की पूर्ति केशव से की जाती। मगर दूर इमारतों से, झाड़ियों से, गंदी नाली से बॉल लाने का ज़िम्मा केशव का ही होता, चाहे वह दोनों टीमों में किसीका भी हिस्सा हो। कई बार उनकी बॉल किसी

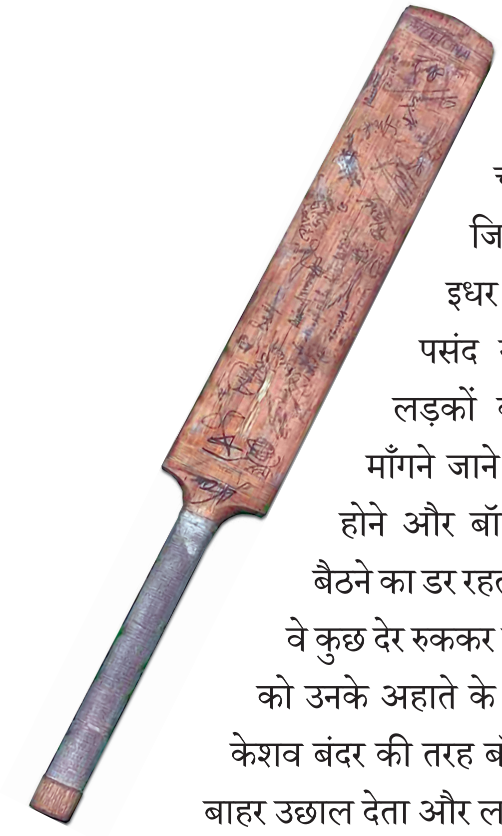

खूँखार दंपति के अहाते में चली जाती, जिन्हें लड़कों का इधर खेलना ही पसंद नहीं था। बड़े लड़कों को वहाँ बॉल माँगने जाने पर अपमानित होने और बॉल से हाथ धो बैठने का डर रहता था। इसलिए वे कुछ देर रुककर चुपके से केशव को उनके अहाते के अंदर उतारते। केशव बंदर की तरह बॉल को ढूँढ़कर बाहर उछाल देता और लड़के केशव को वापस अहाते के बाहर खींच लेते। खेल के ज़्यादातर समय केशव किनारे बैठा, बाकी लड़कों को खेलता देखता रहता।

कोई भी टीम उसे अपनी तरफ़ खिलाने को तैयार नहीं होती थी। कई बार केशव ने अपने माता-पिता से उसके लिए भी बल्ला और बॉल खरीद देने का आग्रह किया था। मगर माता-पिता ने उसे डपट दिया था–

"जब तू अच्छे नंबर से पाँचवीं पास कर लेगा तो एक बॉल खरीद ही देंगे!"

"और बल्ला...?"

"उसके बारे में भी तब सोचेंगे!"

बेचारा केशव दिन को रुआँसा पड़ा रहता, मगर रात को सपने में वह अपने को अक्सर क्रिकेट खेलता देखा करता। उसके हाथों में नया बल्ला और सिर पर झक व्हाइट कैप होती। टाँगों पर शानदार मोटे पैड कसे होते। मोटे मेंढ़क की तरह दिखते अपने उस रूप की कल्पना पर वह मन-ही-मन मुस्कुराता। दूसरे लड़के चकित हो उसे खेलता देखते रहते और वह दनादन रन पर रन बना रहा होता। ये छक्का... ये चौका... नहीं-नहीं, नॉट आउट हूँ। वह बड़बड़ाते हुए कभी-कभी उठ बैठता तो उसे माता-पिता की डाँट भी खानी पड़ती।

> *केशव ऐसा सपना क्यों देखता होगा?*

इधर कॉलोनी के लड़कों ने होली के नाम से मोहल्ले में चंदा किया, कुछ अपना भी जोड़ा। और शहर जाकर जमा चंदे से नई क्रिकेट सामग्री के साथ एक शील्ड भी खरीद ली। चार दिनों तक चलने वाले उनके इस टेस्ट-मैच में, जीतने वाली एक टीम का उस शील्ड पर कब्ज़ा होना तय था। लड़के दो

टीमों में बँटे और कुछ दिनों अभ्यास भी करते रहे। फिर अपनी-अपनी टीम को जिताने के लिए मैदान में उतर गए । केशव को किसी भी टीम में जगह नहीं मिली थी ।

कुछ समय तक खेल अच्छा चलता रहा। फिर एक बल्लेबाज ने ऐसा छक्का मारा कि सब हक्का-बक्का रह गए । बॉल पास की निर्माणाधीन एक तीन मंजिला इमारत की छत पर चली गई । लड़कों के पास नई वह इकलौती बॉल थी और इमारत के पीछे की हिलती चाली से चढ़कर छत तक जाना उनके लिए मुश्किल काम था। उनका खेल रुक गया और वे एक दूसरे को कोसते, गाली देते नीम के नीचे आकर खड़े हो गए ।

"दस बार कहा कि यहाँ से कहीं और जाकर इस मैच को खेलते हैं, मगर तुम लोग माने नहीं। अब लो!"

"सब इस मनोज की गलती है, जिसने इतनी जोर से बिल्डींग की तरफ मारा था। अब वही जाकर बॉल लाए या फिर अपने पैसे से नया खरीदे। आज का दिन तो खराब हो ही गया समझो!"

"मुझे क्या पता था कि बॉल इतनी ज़्यादा उछल जाएगी! तुम लोगों ने यदि यहीं सामने रोक ली होती तो वह पीछे जाती ही क्यों ? कमज़ोरी तुम्हारी है!"

"अब आधा दिन बचा है और पास में कोई दुकान भी नहीं है!"

सभी लड़के भुनभुनाते हुए नीम की छाया में ही निराश बैठ गए ।

अचानक निराश लड़कों के बीच उनकी बॉल आकर गिरी। चकराए चकित लड़कों ने देखा कि उस इमारत की छत पर केशव मुस्कुराता हुआ खड़ा था और वहाँ से हाथ हिला रहा था।

लड़के उछल पड़े। एक बड़े लड़के ने खुश होकर कहा, "वाह! टार्जन है ये तो! चलो यार, काम बन गया।"

> 'चलो यार, काम बन गया'–क्या, लड़कों का यह व्यवहार उचित है? क्यों?

लड़के केशव के नीचे आने का इंतज़ार किए बिना, फिर अपने खेल में रम गए। जब उनकी बॉल झाड़ी के अंदर चली गई और खेल ज़रा देर रुक गया, तब उन्हें केशव की फिर ज़रूरत महसूस हुई। मगर केशव था कहाँ?

"अबे, देखो सालो, वो लड़का छत से उतरा कि नहीं ?"

दो लड़के दौड़कर इमारत के पीछे बँधी चाली की ओर गए और जो देखा तो चिल्ला पड़े– "अबे, ये तो मर गया लगता है।" बाकी लड़के भी घबराकर उस तरफ़ दौड़े। एक लड़का जो अपने साथ वॉटरबैग लेकर आता था, उसने ज़मीन पर मुड़े-तुड़े बेसुध-से पड़े केशव के सिर पर पानी के छींटे मारे। केशव के शरीर में हल्की-सी हरकत हुई और वह कुनमुनाने लगा– "मेरी टाँग... मेरा हाथ..!"

घबराए एक लड़के ने कहा– "चौक तक दौड़कर दो लोग जाओ और कोई भी ऑटो, टैक्सी मिले फ़ौरन लेकर आओ। हॉस्पिटल ले जाना होगा। हम इसे उठा कर बिल्डिंग के सामने वाले हिस्से में ले चलते हैं।"

लड़कों ने जतन से केशव को उठाया और इमारत के सामने वाले हिस्से की समतल ज़मीन पर ले आए। इतने में केशव के माता-पिता भी दौड़ते हुए आ गए। केशव की माँ चीखकर रो पड़ी। तभी ऑटो भी आ गया। केशव को जल्दी से उसमें लिटाया गया। उसके माता-पिता भी तत्क्षण उसके साथ ऑटो में सवार हो गए।

लड़कों का दूसरा दिन खाली-खाली बीता। उन्होंने तय किया कि बिना घर के लोगों को बतलाए कल वे अपनी साइकिलों से हॉस्पिटल जाएँगे, जहाँ केशव का इलाज हो रहा है । उन्होंने दोपहर का समय तय किया और एक-एक कर सभी नीम के पेड़ के पास जमा होने लगे । मगर तभी उन्होंने देखा, केशव के अस्थायी डेरे के पास एक ऑटो आकर खड़ा हुआ और उसमें से केशव के माता-पिता उतरकर डेरे के अंदर जा रहे हैं। मगर केशव? उन्होंने अपने एक साथी को अकेले चुपचाप जाकर केशव के बारे में खबर लाने के लिए तैयार किया।

यहाँ केशव के प्रति लड़कों की मनोवृत्ति में आया परिवर्तन किसकी ओर संकेत करता है?

वह लड़का गया और उसने ऑटोवाले से बात की और ऑटो में झाँककर चला आया। लौटकर उसने घबराई आवाज़ में धीरे-धीरे कहा, "अबे, ऑटो में केशव एक करवट लेटा है ! मुझे उसने नहीं देखा। उसके एक हाथ और एक पैर में प्लास्टर चढ़ा हुआ है। ऑटोवाले ने बतलाया कि वे सभी अपना सामान बटोरकर उसी ऑटो से अभी बस स्टैण्ड जा रहे हैं । वहीं से बस से अपने गाँव भी निकल जाएँगे ।"

"बेचारे लड़के की हड्डियाँ टूट गई हैं यार, और वह भी हमारे कारण!"

गरीब मज़दूर परिवार, जिसका अपना यहाँ कोई स्थाई ठिकाना नहीं था, अपनी कुल दो-तीन गठरियाँ लेकर जल्दी ही वापस ऑटो में आ बैठा। ऑटो चल पड़ी और जब उन खिलाड़ी लड़कों के सामने पहुँची तो उन्होंने सड़क घेर कर उसे रोक लिया।

"अंकल, केशव कैसा है?"

"आंटी, डॉक्टर क्या बोले? जल्दी ठीक तो हो जाएगा ना?" सारे लड़के चारों तरफ से ऑटो को घेरकर खड़े थे और लेटे हुए केशव को देखते हुए उसके माता-पिता से पूछ रहे थे । केशव तकलीफ़ में तो था, मगर अब लड़कों की आवाज़ सुनकर जाग गया था और इन्हें देखता हुआ लेटे-लेटे मुस्कुरा रहा था। अपना एक साबुत हाथ ज़रा-सा ऊपर उठाया तो लड़के उससे हाथ मिलाने को टूट पड़े ।

"तुम जल्दी ठीक हो जाओगे केशव" लड़कों की एक टीम के कप्तान ने कहा और अपने हाथ में रखा बिस्कुट का पैकेट केशव की माँ को सौंप दिया– "आंटी, इसे रास्ते में भूख लगेगी तो खिलाइएगा!"

"अब जब तुम लौटोगे केशव, तो हमारी टीम से खेलना।" पहली टीम के कप्तान ने केशव को ऑफ़र दिया। लड़कों ने अपने हाथों का बल्ला, पैड, स्टम्प, बॉल, और वह शील्ड जो किसी टीम की नहीं हो सकी थी, ऑटो के पीछे की जगह में केशव को दिखाते हुए धर दिया। एक कप्तान ने अपनी जेब से व्हाइट कैप निकाली और केशव के सिर की तरफ़ धर दी।

ऑटो आगे बढ़ने लगी तो केशव ने अपने पिता से कहा– "बाबू, मुझे कैप पहना दो!"

पिता ने व्हाइट कैप केशव के सिर पर पहना दी। ऑटो के आगे बढ़ने से दूर होती क्रिकेट टीमों को, जो अब भी एक जगह खड़ी, ऑटो की तरफ़ देखती हाथ हिला रही थीं, केशव ने अपने साबुत हाथ से सिर की कैप उतारी और ऑटो के बाहर निकालकर लहराने लगा।

कैप उतारकर ऑटो के बाहर लहराना किसका सूचक है?

गतिविधियाँ

» **कहानी का प्रसंग समझें, चर्चा करें :**

- कहानी में चित्रित प्रवासी मज़दूर परिवार की चुनौतियाँ क्या-क्या हैं?
- केशव शहर के अपने डेरे से क्यों बाहर निकलता है?
- केशव के सपनों के प्रति उसके माता-पिता का रवैया क्या था?
- कहानी के आरंभ में केशव के प्रति शहरी लोगों का कौन-सा मनोभाव दिखाया गया है?
- केशव के प्रति शहरी लड़कों का मनोभाव कैसे बदलता है?
- केशव को माँ-बाप के साथ गाँव वापस क्यों जाना पड़ा?
- कहानी की चरम सीमा पर आपका विचार क्या है?

» **सही आशय चुनें, मिलान करें :**

घटना / कथन	आशय
लड़कों ने कुछ दिनों अपने खेल में तो शामिल नहीं किया, मगर उसे अपनी हँसी-मज़ाक का विषय ज़रूर बना लिया था।	• विपत्ति की स्थिति का सामना करना • निराशा की भावना • सामाजिक समावेश • सामूहिक अलगाव • उम्मीद की भावना
अब जब तुम लौटोगे केशव, तो हमारी टीम से खेलना।	
रात को सपने में केशव अपने को अक्सर क्रिकेट खेलता देखा करता।	
चौक तक दौड़कर दो लोग जाओ और कोई भी ऑटो, टैक्सी मिले फौरन लेकर आओ।	

» **कहानी की मुख्य घटनाओं को चुनकर लिखें और कॉमिक स्ट्रिप तैयार करें :**

- जैसे

» **चर्चा करें और लिखें, कहानी का कौन-सा पात्र आपको सबसे ज्यादा पसंद आया और क्यों?**

- पात्र का नाम
- पात्र की विशेषता
- पात्र का व्यक्तित्व
- पात्र का मनोभाव
- पात्र की भूमिका

» **वाक्यों के रेखांकित अंशों पर ध्यान दें :**

- बड़े लड़कों **<u>को</u>** वहाँ बॉल माँगने जाने पर अपमानित होने का डर रहता था।
- केशव **<u>को</u>** किसी भी टीम में जगह नहीं मिली थी।
- लड़के केशव **<u>को</u>** वापस अहाते के बाहर खींच लेते।
- केशव किनारे बैठा, बाकी लड़कों **<u>को</u>** खेलता देखता रहता।

» **चर्चा करें :**

- *ऊपर के वाक्यों में **<u>को</u>** का प्रयोग प्रत्येक संदर्भ में किस अर्थ को सूचित करता है?*
- *ऐसे प्रयोग कहानी में ढूँढ़कर पुस्तिका में लिखें।*

» **वाक्यों के रेखांकित अंशों पर ध्यान दें :**

- शहर जाकर जमा चंदे **से** नई क्रिकेट सामग्री के साथ एक शील्ड भी खरीद ली।
- खिलाड़ी की कमी की पूर्ति केशव **से** की जाती।
- वह लड़का गया और ऑटोवाले **से** बात की।
- इमारत के पीछे की हिलती चाली **से** चढ़कर छत तक जाना उनके लिए मुश्किल काम था।

» **चर्चा करें :**

- *ऊपर के वाक्यों में* ***से*** *का प्रयोग प्रत्येक संदर्भ में किस अर्थ को सूचित करता है?*
- *'**से**' से युक्त इसी प्रकार के वाक्य चुनकर लिखें।*

» **कहानी के अंत में केशव के प्रति लड़कों के मनोभाव में बदलाव आता है। गाँव पहुँचने के बाद केशव अपने अनुभव डायरी में लिखता है। वह डायरी लिखें।**

» **केशव के गाँव पहुँचने के बाद कप्तान केशव के नाम पत्र लिखता है। वह पत्र लिखें।**

अनुबद्‌ध कार्य

- **कहानी की चरम सीमा को बदलकर लिखें।**

लोकबाबू

जन्म : 10 जून 1954

लोकबाबू का जन्म छत्तीसगढ़ में हुआ। छत्तीसगढ़ अंचल के लोक जीवन की संवेदनशील प्रस्तुति उनकी कहानियों की विशेषता है। टीले पर चाँद, बोधिसत्व भी नहीं आए, जंगलगाथा, बस्तर बस्तर आदि उनकी रचनाएँ हैं।

मदद लें :

बसाहट	-	वास स्थान
शक्ल	-	रूप
बदलना	-	परिवर्तित होना
इमारत	-	मकान
आसपास	-	समीप
गठरी	-	कपड़े में बंधा हुआ सामान
चूल्हा	-	അടുപ്പ്, **hearth**, அடுப்பு, ಒಲೆ
गुज़ारना	-	बिताना
पसारना	-	फैलाना
दादा	-	पिता के पिता
ज़िद	-	हठ
बुढ़ापा	-	वृद्धावस्था
बचा-खुचा	-	बाकी
दिमाग कुतरना	-	सताना
हताश	-	निराश
अस्थाई	-	अस्थिर
डेरा	-	रहने की जगह
मजबूर	-	विवश
आखिर	-	अंत में
अकुलाना	-	घबराना
चक्कर लगाना	-	घूमना
ठहरना	-	रुकना
शामिल करना	-	साथ मिलाना
खोपड़ी	-	सिर
हाथ जमा देना	-	मारना
जताना	-	प्रकट करना
दुखना	-	दर्द होना
उचककर	-	ऊपर उठकर
पक्का होना	-	ദൃഢമാവുക, **to harden**, உறுதி செய்தல், ಗಟ್ಟಿಯಾಗು
भागना	-	ഓടുക, **to run**, ஓடுதல், ಓಡುವುದು
मासूमियत	-	നിഷ്കളങ്കത, **innocence**, களங்கமில்லாத, ನಿಷ್ಕಲಂಕತೆ

झापड़ लगाना - हथेली से मारना

झाड़ी - കുറ്റിക്കാട്, bush, குற்றிக்காடு, ಪೊದೆ

गंदी नाली - അഴുക്ക് ചാൽ, drainage, வடிகால், ಚರಂಡಿ

जिम्मा - ചുമതല, responsibility, பொறுப்பு, ಜವಾಬ್ದಾರಿ

हिस्सा - अंग, ഭാഗം, part, பகுதி, ಭಾಗ

खूँखार दंपति - भयानक दंपति

अहाता - പുരയിടം, yard, வளாகம், ಮನೆಯ ಸುತ್ತು ಮುತ್ತಲಿರುವ ಸ್ಥಳ

हाथ धो बैठना - नष्ट कर देना

उतारना - താഴെ ഇറക്കുക, to bring down, கீழே இறக்குதல், ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಸುವುದು

ढूँढ़ना - അന്വേഷിക്കുക, to search, தேடுதல், ಹುಡುಕುವುದು

उछालना - എറിയുക, to throw, எறிதல், ಬಿಸಾಡುವುದು

खींचना - വലിക്കുക, to pull, இழுத்தல், ಎಳೆಯುದು

ज़्यादातर - अधिकतर

खिलाना - കളിപ്പിക്കുക, to cause a person to play, விளையாடச் செய்தல், ಆಡಿಸುವುದು

बल्ला - ബാറ്റ്, cricket bat, கிரிக்கெட் மட்டை, ಬ್ಯಾಟ್

डपटना - डाँटना

रुआँसा - കരയുന്നതു പോലെയുള്ള, on the verge of weeping, அழுவதுபோன்ற, ಕೂಗುವ ಹಾಗೆ ಇರುವ

झक - चमकता, തിളങ്ങുന്ന, shining, மின்னுகின்ற, ಹೊಳೆಯುವ

शानदार - सुंदर

दनादन - निरंतर

छक्का - छह रन

चौका - चार रन

बड़बड़ाना - പുലമ്പുക, to mutter, முணுமுணுத்தல், ಗೊಣಗುವುದು

डाँट खाना - फटकार मिलना

मोहल्ला - शहर या कस्बे का एक भाग

चंदा - പിരിവ്, donation, பணம் வசூலித்தல், ಹಣ ಸಂಗ್ರಹ ಮಾಡುವುದು

बँटना - टीम बनना

बल्लेबाज - batter, ಬ್ಯಾಟ್ಸ್ ಮನ್ மட்டைவீச்சாளர்

हक्का-बक्का - विस्मित

इकलौता - एकमात्र, ഏക, single, ஒற்றை, ಒಬ್ಬಂಟಿಗ

हिलना	-	ഇളകുക, to shake, இளகுதல், ಅಲುಗಾಡಿಸು
चाली	-	छत पर चढ़ने का अस्थाई प्लैटफॉर्म
कोसना	-	शाप देना
उछल जाना	-	കുതിച്ചു പോവുക, to bounce up, குதித்துச் செல்லுதல், ಹಾರಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು
कमज़ोरी	-	दोष
भुनभुनाना	-	गुस्सा होना
चकराना	-	അമ്പരക്കുക, to be surprised, ஆச்சரியமடைதல், ಆಶ್ಚರ್ಯಚಕಿತನಾಗಿ
चकित	-	विस्मित
रमना	-	आनंद करना
मुड़े-तुड़े	-	ഒടിഞ്ഞുമടങ്ങി, crumpled, ஒடிதல், ತುಂಡುಮಾಡುವುದು
बेसुध	-	अबोध
छींटे	-	बूँदें
हरकत	-	അനക്കം, movement, அசைந்தான், ಚಲನೆ
कुनमुनाना	-	പിറുപിറുക്കുക, to mutter, முணுமுணுத்தல். ಗೊಣಗುವುದು
चौक	-	जंक्शन
जतन से	-	सावधानी से
लिटाना	-	കിടത്തുക, to cause someone to lie down, படுக்கவைத்தல், ಮಲಗಿಸು
खबर लाना	-	समाचार जानना
करवट	-	ഒരു വശം ചരിഞ്ഞുള്ള കിടപ്പ്, lying on one side, ஒரு பக்கமாக ச்சாய்ந்து படுத்தல், ಒಂದು ಮಗ್ಗುಲಿಗೆ ತಿರುಗಿ ಮಲಗು
घेरना	-	വളയുക, to surround, சுற்றி வளைத்து, ಸುತ್ತುವರಿಯು
तकलीफ	-	कठिनाई
साबुत	-	स्वस्थ
टूट पड़ना	-	कुछ लेने के लिए एकदम दौड़ पड़ना
धरना	-	रखना
लहराना	-	വീശുക, to wave, வீசுதல், ಬೀಸುವುದು

इकाई : तीन

दिलों का मिलन

हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज आप क्या कर रहे हैं।

-महात्मा गांधी

» **पहचानकर लिखें, ये किन-किनके बारे में हैं :**

- मिशनरीज़ ऑफ़ चैरिटी की स्थापना की, जो दुनिया भर में अंधे, वृद्ध और विकलांग लोगों की सेवा करती है।
- 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार और 1980 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

? → ______

- 'नर्मदा बचाओ' आंदोलन की संस्थापक सदस्य।
- साल 2000 में टाइम पत्रिका ने 20वीं सदी के 100 नायकों में शामिल किया।

? → ______

- अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित आज़ादी की लड़ाई का नेतृत्व किया।
- विदेशी-बहिष्कार और स्वदेशी-प्रचार का प्रोत्साहन किया।

? → ______

- कुष्ठ रोगियों के उपचार, पुनर्वास और सशक्तीकरण के लिए आनंदवन की स्थापना की।
- पूरे जीवन में कुष्ठ रोगियों, आदिवासियों और मजदूर-किसानों के साथ काम करते रहे।

? → ______

1

संस्मरण

दिल्ली में उनींदे

गगन गिल

रोज़ जैसा दिन है। फरवरी की शाम। हवा में ठंडक है। मैं अभी-अभी 'स्वाति' से साहित्य अकादमी के कुछ प्रकाशन खरीदकर इस सड़क पर पहुँची हूँ। मंदिर मार्ग पर सड़क सुनसान है। बिरला मंदिर के बाहर दो-एक ऑटो खड़े हैं।

एक से मैं पूछती हूँ– "चलना है?" "बैठिए" –वह कहता है। मैं गिरती-पड़ती अपनी किताबें सीट पर जमाती हूँ।

उसे चलने में अभी देर है। उसके शरीर की हरकत में एक अजीब-सी थकान है। वह अपनी सीट के नीचे से निकालकर एक गंदा, उधड़ा, आधी बाँह का भूरा स्वेटर पहन रहा है। धीरे-धीरे। अभी मेरा ध्यान उसके चेहरे की तरफ़ नहीं गया। उसे मैं बाद में देखूँगी। ऑटो के ड्राइविंग आईने में, जिसमें उसकी आँखें और भी धँसी दिखेंगी और चेहरे की हड्डियाँ और भी उभरीं। उसके चेहरे पर भूख और बीमारी के अलावा एक और चीज़ भी दिखेगी। अभी मुझे उसका नाम नहीं मालूम । आने वाले दिनों में मैं उसके लिए बिलकुल सटीक शब्द ढूँढ़ पाऊँगी। लेकिन अभी नहीं। यह बाद में होगा।

वह चलता है। ऑटो चलते ही उसकी खाँसी शुरू हो जाती है। मालूम नहीं, उसे ठंड लग रही है या हम ट्रैफ़िक की दमघोंटू के बीचों-बीच आ गए हैं। हमने दो मोड़ पार

कर लिए हैं, लेकिन न उसकी खाँसी रुकती है, न उसका ऑटो। इसके बाद ही मैं उसका चेहरा देखती हूँ। ड्राइविंग आईने में।

"यह खाँसी कब से है?" मैं पीछे बैठी पूछती हूँ। "होगी कोई दस-बारह साल से।"

"किसी डॉक्टर को नहीं दिखाया?"

"पैसा भी तो चाहिए, उसके लिए !"

हमारी बातचीत टूट जाती है। सड़क के दोनों ओर ट्रैफ़िक जा रहा है। सारी दुनिया कार्य-व्यापार में लगी है। रुपए का सिक्का सबको दौड़ा रहा है। किसीके हिस्से में कम, किसीके हिस्से में ज़्यादा... उसका दम फिर फूल रहा है।

> 'रुपए का सिक्का सबको दौड़ा रहा है, किसीके हिस्से में कम, किसीके हिस्से में ज़्यादा' –इससे आपने क्या समझा?

"आप दिल्ली कब आए थे?"

"1979 में।"

"घर कहाँ है आपका?"

"यही है।" वह मुझे ऑटो के आईने में से देखता है। ज्यों घर आए मेहमान को देख रहा हो।

"आपका मतलब है, आप तब से सड़क पर ही हैं?"

"हाँ।"

यानी उसे बिना सोए चौदह साल बीत गए ! मैं यह तो बता सकती हूँ, कि वह गरीब है, कि उसके पास पूरे कपड़े नहीं हैं, कि वह किसी भी ऐसे व्यक्ति जैसा लगता है जो फ़ाके का अभ्यस्त हो। लेकिन बेघर? बेघर तो वह कहीं से नहीं लगता।

"आपका मतलब, आप इस तीन फीट लंबी पिछली सीट पर सोते हैं?"

"हाँ ।"

"और आपकी चीज़ें ?"

"उनपर आप बैठी हैं..."

वह बताता है कि जिस सीट पर मैं बैठी हूँ, उसके नीचे उसका बक्सा है, जिसमें एक कम्बल है, एक जोड़ी कपड़े हैं और एक कटोरा है। कटोरा पानी पीने के काम भी आता है और खाना रखने के भी।

"आप खाना कहाँ खाते हैं ?"

"किसी भी ढाबे में।"

"और बाथरूम के लिए ?"

"पब्लिक शौचालय है। नहा मैं कहीं भी लेता हूँ । सड़क के किनारे किसी भी नल पर। अकसर पंचकुइयाँ रोड पर नहाता हूँ । इतवार के दिन। वह जगह ठीक है। वहाँ मेरे जैसे कई लोग आते हैं..."

मेरा घर आ गया है। उसका मीटर देखती हूँ, तो शक होता है, कि रास्ते में कहीं अटक तो नहीं गया था। उससे पूछती हूँ, "आपका मीटर ठीक तो है न?"

वह कहता है, "जी, बिलकुल ठीक। पिछले छह साल से एक पैसे का फ़र्क नहीं ।"

उतरते-उतरते उससे पूछती हूँ, "सुनिए, क्या हम कल किसी समय मिल सकते हैं?"

"क्यों?" वह जानना चाहता है।

"मैं आपके बारे में सब जानना चाहती हूँ।"

"उससे कुछ होगा?"

"क्या?"

"क्या? उसके बाद सरकार मेरे लिए कुछ करेगी?"

» 'क्या उसके बाद सरकार मेरे लिए कुछ करेगी?' –जनता सरकार से क्या-क्या उम्मीदें रखती है?

"यह तो कह नहीं सकती। लेकिन अगर आप बात करने के लिए हाँ करें, तो कम-से-कम आम लोगों को आपके जीवन के बारे में पता चलेगा ।"

"और आपको क्या मिलेगा ?"

"मैं अपना काम कर रही होऊँगी। मैं रेडियो के लिए प्रोग्राम बना रही हूँ..."

"ठीक है। मैं सब समझ रहा हूँ। आपके पास भी कोई ताकत नहीं है। आप भी मेरे जैसी हैं। मैं रोड पर सवारी ढूँढ़ता हूँ, और आप कहानी... अगर मेरी कहानी सुनने से आपका काम होता है तो मैं आ जाऊँगा।"

» 'अगर मेरी कहानी सुनने से आपका काम होता है तो मैं आ जाऊँगा।' –यहाँ रिक्षा चालक का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

"कितने बजे ?"

"सुबह दस बजे ?"

"बहुत अच्छा।"

अगले दिन वह आता है। मेरे घर। करीब साढ़े पाँच फीट ऊँची उसकी दुबली काया बड़े कमरे के दरवाज़े पर ही सिकुड़ जाती है। वह सोफ़ा पर नहीं, फर्श पर बैठ जाता है–

"मुझे यहीं बैठा रहने दीजिए। मैं आपका सोफ़ा गंदा नहीं करना चाहता।"

मैं कल की अपनी जान पहचान के नाते उसे दोस्ताना मुसकान देती हूँ। उसके शरीर में, चेहरे पर, हाथ-पाँव में इतनी सारी नीली रगें हैं– मैंने पहले नहीं देखा था। वह बैठता है, तो जैसे सारी भूख-प्यास उसके साथ बैठ जाती है।

"कुछ चाय वगैरह लेंगे ?"

वह कुछ झिझकता, कुछ शर्माता है।

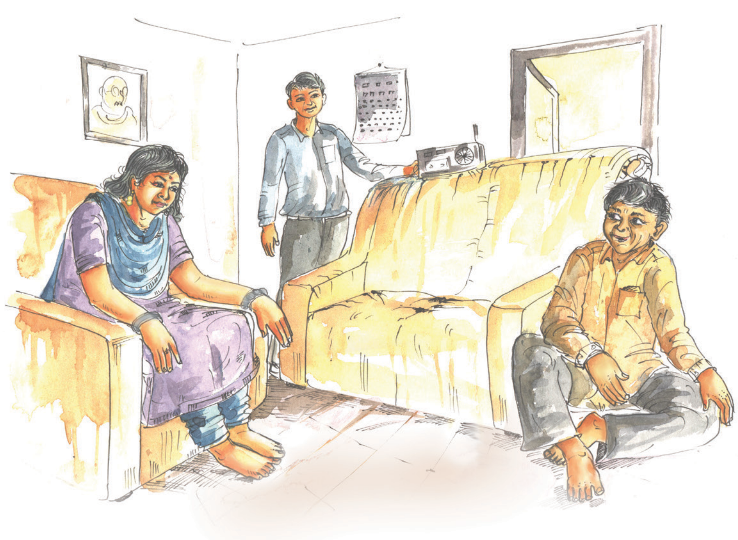

सैंडी मेरे हारवर्ड के दिनों का साथी, अपना टेपरिकॉर्डर लगा रहा है। लैटिन अमरीका के देशों के बाद यह पहला

मौका है, जब उसका वास्ता तीसरी दुनिया के देश की गरीबी से पड़ रहा है। हम भारत में अमेरिका के नेशनल पब्लिक रेडियो के लिए 'अन्न और भूख' श‍ृंखला के प्रोग्राम बना रहे थे कि मुझे यह ऑटो ड्राइवर टकरा गया। अब हम उसकी नींद के बारे में जानना चाहते हैं। असंभव नींद के बारे में...

» नींद को यहाँ असंभव क्यों बताया गया होगा? • • •

मैं चाय बना लाती हूँ ताकि हम शुरुआती अटपटेपन में से निकल सकें।

"नाम क्या है आपका?"

" राजा राम ।"

"घर कहाँ है?"

"उन्नाव, यू.पी. में ।"

"ऑटो चलाना कैसे शुरू किया?"

"पहले आठ साल तक तो रिक्शा चलाता रहा। चाँदनी चौक में। फिर एक बहुत दयालु, अमीर आदमी से मुलाकात हो गई। डेढ़ साल मैंने उसकी सेवा की। उसे रोज़ ले जाता था। कभी एक पैसा नहीं लिया। उसने बदले में मुझे यह पुराना ऑटो ले दिया, जिसे अब चलाता हूँ।"

"उससे पहले क्या करते थे?"

"गाँव में मज़दूरी करता था, खेतों में। घर हमारा बारिशों में ढह गया था। दोबारा मैं उसे बनवा नहीं पाया। भुखमरी थी। एक दिन मैंने तय किया कि दिल्ली चलें..."

"गाँव में कोई ज़मीन नहीं थी?"

"नहीं, हमारे पास कभी ज़मीन नहीं रही, पुश्तों में। मेरा बाप अंधा हो गया था, जब मैं चौदह-पंद्रह बरस का था। और गाँव में मुझे कोई काम नहीं मिलता था। कोई दूसरा चारा नहीं था ।"

"लेकिन दिल्ली ही क्यों आना चाहते थे?"

"गाँव में मैं सिर पर बोझा ढोता था। और एक रात मैंने सोचा, मेरे सिर पर छत तो वैसे भी नहीं है। क्या फ़र्क पड़ता है, कि मैं गाँव के खुले में सोऊँ या दिल्ली की सड़क पर? सो पहले मैं कानपुर गया, फिर वहाँ से दिल्ली ।"

"अब खुश हैं यहाँ पर ?"

"पेट भरने आया था। मुझे खुशी है कि वह भर लेता हूँ। और ऑटो चलाता हूँ। सिर पर बोझ उठाने से तो अच्छा ही है। नहीं?"

मुझे नहीं मालूम, बोझा ढोते हुए यह संसार कैसा दीखता है, सड़क पर सोते हुए कैसा, ऑटो में रहते हुए कैसा। मेरे पास उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं ।

"ऑटो चलाते हुए कैसा लगता है?"

"ऑटो बड़ी मुश्किल सवारी है। सारा वक्त खड़-खड़ करती है। जवान ड्राइवरों के लिए तो ठीक है, मेरे जैसों के लिए नहीं। आपको पता है, ऑटो चलाते हुए कोई मर भी सकता है? और फिर सब तरफ़ से धुआँ। मुझे तो तब अच्छा लगता है, जब कोई ग्राहक किसी खुली तरफ़ जा रहा हो... "

"आपकी यह खाँसी... क्या धुएँ के कारण ?"

"पता नहीं, किस कारण। शायद भगवान की सज़ा हो! मैं तो बस यही जानता हूँ कि मैं जब धुएँ में साँस लेता हूँ, तो मेरा भीतर तक सिकुड़ जाता है।"

"उम्र क्या होगी आपकी?"

"क्या पता! शायद पचास साल । बस इतना याद है, कि सन् '62 में मैं पाँचवीं में पढ़ता था। और स्कूल जाना मैंने 8 साल की उम्र से शुरू किया था..."

मैं हिसाब लगाती हूँ। मेरे हिसाब से उसे चालीस के ऊपर नहीं होना चाहिए। तब क्या उसकी थकान के सब साल उसमें जुड़ गए हैं?

» 'तब क्या उसकी थकान के सब साल उसमें जुड़ गए हैं?' – लेखिका ने ऐसा क्यों सोचा होगा?

"आपके लिए एक अच्छा दिन क्या होता है?"

अच्छा दिन कहते ही मेरे मुँह में पानी भर आता है। वर्षा में धुले हरे पत्ते, भीगी-भीगी हवा, अधगीली सड़कें– सब आँखों के सामने घूम जाते हैं।

"मुझे नहीं मालूम, अच्छा दिन क्या होता है। दो वक्त की रोटी मिल जाए गनीमत है।"

» 'दो वक्त की रोटी मिल जाए गनीमत है।' –इस कथन पर आपका विचार क्या है?

यह मेरा पहला पाठ है। हम एक ही शहर में रहते हुए दो अलग-अलग मौसमों में रहते हैं । अन्न और भूख के मौसम में । घर और बेघरी के मौसम में ।

» 'हम एक ही शहर में रहते हुए दो अलग मौसमों में रहते हैं। अन्न और भूख के मौसम में। घर और बेघरी के मौसम में।' –इस कथन पर आपका विचार क्या है?

गतिविधियाँ

» किसने किससे कहा ?

- आपका मतलब आप तब से सड़क पर ही हैं ।
- मैं आपका सोफ़ा गंदा नहीं करना चाहता हूँ ।
- आम लोगों को आपके जीवन के बारे में पता चलेगा ।
- आपके लिए एक अच्छा दिन क्या होता है?
- दो वक्त की रोटी मिल जाए गनीमत है ।
- आपके पास भी कोई ताकत नहीं है, आप भी मेरे जैसी हैं ।

» हर वाक्य किससे संबंधित है?

वाक्य	व्यक्ति
राजा राम को पुराना ऑटो ले दिया।	• राजा राम
रेडियो के लिए प्रोग्राम बना रही है।	• सैंडी
पहले गाँव के खेतों में मज़दूरी करता था।	• दयालु, अमीर आदमी
हार्वर्ड के दिनों में लेखिका का साथी रहा।	• लेखिका
बचपन से ही बाप अंधा हो गया।	
साक्षात्कार की रिकॉर्डिंग कर रहा है।	
चांदनी चौक में रिक्शा चलाता है।	

» वाक्यों को सही क्रम से लिखें :

- गाँव में सिर पर बोझा ढोता रहा ।
- बारिश में उसका घर ढह गया ।
- आठ साल तक साइकिल रिक्शा चलाता रहा ।
- दिल्ली जाने का निश्चय किया ।
- अपने गाँव से कानपुर गया ।
- ऑटो को ही अपना घर बनाया ।
- डेढ़ साल तक मुफ़्त में सेवा करता रहा ।

» **पढ़ें, पहचानें :**

- मैंने इससे पहले किसी **<u>बेघर</u>** के बारे में नहीं सोचा था।
- एक **<u>बेफ़िक्र</u>** नींद का न मिलना किसीकी आत्मा में कहाँ सुराख कर सकता है।

रेखांकित शब्दों की विशेषताओं पर चर्चा करें, नीचे की तालिका भरें।

संज्ञा	'बे' उपसर्ग वाले शब्द	अर्थ
घर	बेघर	जिसका कोई घर न हो।
फ़िक्र	....	जिसकी कोई फ़िक्र न हो।
काम	बेकाम	....
....	बेनाम	जिसका कोई नाम न हो।
होश	....	जिसका कोई होश न हो।
....	बेशर्म	जिसकी कोई शर्म न हो।
....	बेहिसाब	....

» **पहचानें, लिखें :**

सरकार मेरे लिए कुछ **<u>करेगी।</u>**

मैं आ **<u>जाऊँगा।</u>**

- रेखांकित शब्दों के प्रयोग की विशेषताओं पर चर्चा करें। ऐसे वाक्य पाठ से छाँटकर लिखें।

» **ज़रा ध्यान दें :**

- उसकी खाँसी नहीं रुकती है।
- उसका ऑटो नहीं रुकता है।

***न** उसकी खाँसी रुकती है **न** उसका ऑटो।*

» नीचे दिए गए सरल वाक्यों को नमूने के अनुसार बदलकर लिखें :

- अमन को तमिल नहीं आती है। अमन को तेलुगु नहीं आती है।
- दीदी चाय नहीं पीती है। दीदी शर्बत नहीं पीती है।
- नानी को सिनेमा पसंद नहीं। नानी को नाटक पसंद नहीं।

» **क्रियापदों की विशेषता समझें :**

- मैंने **तय किया** कि दिल्ली चलें।
- लोगों को आपके जीवन के बारे में **पता चलेगा**।

» रेखांकित प्रयोगों पर ध्यान दें। ऐसे कुछ विशेष प्रयोग पाठ से चुन लें और अपने वाक्य में प्रयोग करें।

» **रोल-प्ले चलाएँ :**

- पठित संस्मरण की किसी घटना के आधार पर रोल-प्ले चलाएँ।

» **दोस्तों से चर्चा करें :**

- राजा राम जैसे लोगों की समस्याओं के क्या-क्या कारण होंगे?
- राजा राम जैसे लोगों की सामाजिक प्रगति के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

» **'बेघरों की समस्या' विषय पर लघु लेख लिखें।**

अनुबद्ध कार्य

- संस्मरण का ऑडियो बुक तैयार करें।
- मान लें, आप राजा राम का साक्षात्कार लेने जा रहे हैं, तो उससे पूछने के लिए प्रश्नावली तैयार करें।

गगन गिल

जन्म : 19 नवंबर 1959

गगन गिल का जन्म नई दिल्ली में हुआ। 'एक दिन लौटेगी लड़की' 'अंधेरे में बुद्ध', 'मैं जब तक आई बाहर', 'दिल्ली में उनींदे', 'अवाक्' आदि प्रमुख कृतियाँ हैं। वे भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार से सम्मानित हैं।

मदद लें :

- उनींदे - ഉറക്കമില്ലാത്ത,sleepless, தூக்கமில்லாத, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ
- सुनसान - निर्जन
- गिरती-पड़ती - बड़ी कठिनाई से
- जमाना - इकट्ठा करना
- देर - समय
- हरकत - चेष्टा
- अजीब-सी - विचित्र सी
- थकान - थकावट
- गंदा - मैला
- उधड़ा - फटा हुआ
- आधी बाँह - മുറിക്കൈ, half sleeve, அரைக் கைச்சட்டை, ಅರ್ಧತೋಳು
- भूरा - തവിട്ടുനിറത്തിലുള്ള, Brown, தவிட்டு நிறம், ಕಂದು
- धँसी - കുഴിഞ്ഞ, sunken, குழிந்த ಗುಳಿಗಳಿಗೆ ಹೋದ
- हड्डी - अस्थि
- उभरना - प्रकट होना
- बिलकुल - പൂർണമായും, absolutely, முற்றிலும், ನಿಜವಾಗಿಯೂ,
- सटीक - उचित
- ढूँढ़ना - खोजना
- खाँसी - ചുമ, cough, இருமல், ಕೆಮ್ಮು
- ट्राफ़िक की दमघोंटू - ഗതാഗതക്കുരുക്ക്, traffic jam, போக்குவரத்து நெரிசல், ಸಂಚಾರಸ್ತಂಭನ
- मोड़ - വളവ്, a curve, வளைவுகளைக் கடந்து சென்றது, ವೃತ್ತವನ್ನು ದಾಟಿ ಹೋಗುವುದು
- टूट जाना - खंडित होना
- दम फूलना - साँस चढ़ना, ശ്വാസം മുട്ടുക, to be out of breath, மூச்சுத்திணறல், ಉಸಿರು ಗಟ್ಟುವುದು
- ज्यों - जैसे ही
- मेहमान - अतिथि
- बेघर - बिना घर का വീടില്ലാത്ത, homeless, வீடில்லாத , ಮನೆ ಇಲ್ಲದ
- वास्ता पड़ना - व्यवहार का अवसर आना
- बेफ़िक्र - निश्चिंत
- सुराख - छेद
- समस्या - പ്രശ്നം, Problem, பிரச்சினை, ಸಮಸ್ಯೆ
- यानी - अर्थात
- फ़ाका - പട്ടിണി, starvation, பட்டினி, ಉಪವಾಸ,
- कटोरा - കിണ്ണം, bowl, கோப்பை, ಗಿಣ್ಣಾಲು
- ढाबा - छोटा सा भोजनालय
- नल - tap
- अकसर - प्रायः
- शक - शंका
- अटकना - रुकना

फ़र्क - अंतर

नागरिक - പൗരൻ, citizen, குடிமகன், ನಾಗರಿಕ

आम लोग - जनसाधारण

पता चलना - मालूम होना

हकदार - അവകാശി, entitled person, உரிமையாளர், ಅರ್ಹತೆಇರುವ,

ताकत - शक्ति

दुबली - മെലിഞ്ഞ, thin, மெலிந்த, ಸಪೂರವಾದ

काया - शरीर

सिकुड़ जाना - संकुचित होना

फ़र्श - തറ, floor, தரை, ನೆಲ

जान पहचान के नाते - പരിചയത്തിന്റെ പേരിൽ, as an acquaintance, ಪರಿಚಯವಿದೆಎಂಬ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ தெரியும் என்ற நிலையில்

दोस्ताना मुस्कान - दोस्तों-सी मुस्कराहट

रग - नस

वगैरह - आदि

झिझकना - हिचकना

शर्माना - लज्जित होना

मौका - अवसर

वास्ता - संबंध

टकरा जाना - मिलना

शुरुआती - आरंभ के

अटपटापन - അസ്വസ്ഥത, awkwardness அருவருப்பு, ಎಡವಟ್ಟು

मुलाकात - भेंट

मज़दूरी - श्रम

ढहना - ध्वस्त होना, തകരുക, to get destroyed, இடிந்து விழுந்தது, ನಾಶವಾಗು,

दोबारा - फिर

भुखमरी - भूखों मरने की स्थिति

तय करना - निश्चय करना

पुश्तों में - परंपरा से

चारा - विकल्प, choice

बोझा ढोना - भार ले जाना

छत - മേൽക്കൂര, roof, ಛಾವಣಿ, மேற்கூரை

खुले में सोना - തുറസ്സായ സ്ഥലത്ത് ഉറങ്ങുക, to sleep in an open space, திறந்த வெளியில் உறங்குதல், ತೆರೆದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ನಿದ್ರೆಮಾಡು

सो - इसलिए

ग्राहक - ഉപഭോക്താവ്, customer, வாடிக்கையாளர், ಗ್ರಾಹಕರು

सज़ा - दंड

धुलना - गीला होना

अधगीला - आधा भीगा हुआ

ग़नीमत - खुशी की बात

2

दोहे

मधुर वचन

कबीरदास

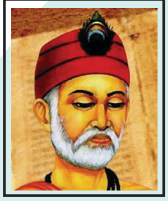

ऐसी बाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
अपना तन सीतल करैं, औरन को सुख होय ॥

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ॥

» विश्लेषण करें :

- 'वाणी से तन-मन को शांत किया जा सकता है' –क्या आप इस कथन से सहमत हैं? क्यों?
- औरों को हम कैसे सुख दिला सकते हैं?

- इन पंक्तियों से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?
- कबीर ने सज्जन की तुलना सूप से की है। क्यों?

तुलसीदास

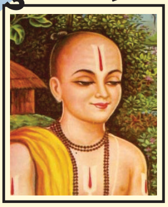

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब तक घट में प्राण ॥

सचिव वैद्य गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नास ॥

» विश्लेषण करें :

- 'दया धर्म का मूल है' –क्या आप इस कथन से सहमत हैं, क्यों?
- 'कभी भी दया न छोड़िये' –कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

- 'राज, धर्म, तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास' –इससे क्या तात्पर्य है?

मन मोती अरु दूध रस, इनकी सहज सुभाय।
फट जाये तो ना मिले, कोटिन करो उपाय॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे पै फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय॥

रहीम

» **विश्लेषण करें :**

- "फट जाये तो ना मिले' –इससे आप क्या समझते हैं?
- इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं?

- 'झटके से मत तोड़ना'-इसके समान आशय वाली पंक्ति चुन लें।
- 'टूटे पै फिर ना जुरे'-ऐसा क्यों कहा होगा?

कबीरदास

कबीरदास का जन्म स्थान काशी माना जाता है। वे मध्यकालीन भारत के भक्त कवि एवं समाज सुधारक थे। साधना के क्षेत्र में वे युग-युग के गुरु थे, उन्होंने संत काव्य का पथ प्रदर्शन कर साहित्य क्षेत्र में नव निर्माण किया था। साखी, सबद और रमैनी उनकी मुख्य रचनाएँ हैं।

तुलसीदास

तुलसीदास मध्यकालीन हिंदी साहित्य के महान रामभक्त कवि थे। उन्होंने रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गीतावली जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की है।

अब्दुर्रहीम खानखाना

अब्दुर्रहीम खानखाना भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में एक थे। उनका जन्म दिल्ली में हुआ। व्यावहारिक और सरल ब्रजभाषा के प्रयोग के ज़रिए काव्य में भक्ति, नीति, प्रेम आदि के लिए वे स्मरणीय हैं। रहीम दोहावली, बरवै आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

गतिविधियाँ

» **सही मिलान करें :**

बाणी	शीतल
आपा	तीनों
सीतल	अहंभाव
तीनि	नाश
नास	तोड़ो
तोरो	आशा
जुरे	जुड़े
आस	वाणी

» **इन आशय वाली पंक्तियों को दोहों से छाँटकर लिखें।**

क) हमें अपने शरीर में प्राण रहते तक दयाभाव को त्यागना नहीं चाहिए।

ख) सार्थक बातों को अपनाना चाहिए और बेकार की बातों को छोड़ देना चाहिए।

ग) अगर प्रेम का धागा एक बार टूट जाए, तो फिर इसे जोड़ना मुश्किल होता है। अगर जुड़ भी जाए, तो उसमें गाँठ पड़ जाती है।

» **पठित दोहों का आशय लिखें।**

» **दोहों का आलाप करें।**

अनुबद्ध्ध कार्य

- दोहों का आलाप करके ऑडियो बुक निकालें।

मदद लें :

बाणी	-	वचन
आपा	-	अहंभाव
खोय	-	त्यागना
मन का आपा खोय	-	अहंभाव छोड़ना
तन	-	शरीर
सीतल करना	-	शीतल करना
औरन को	-	औरों को
सुख होय	-	सुख हो जाए
सूप	-	മുറം, riddle, முறம், ಮುರಾಮ್
सुभाय	-	स्वभाव
गहि रहै	-	ग्रहण करे
थोथा	-	सारहीन
सचिव	-	मंत्री
तीनि	-	तीनों
जौं	-	यदि
प्रिय बोलहिं	-	मीठे बोलने से
आस	-	आशा
होय	-	होता है
बेगिहीं	-	जल्दी से
नास	-	नाश
अरु	-	फूल
कोटिन	-	करोड़ों
धागा	-	ചരട്, String, கயிறு, ದಾರ
मत तोरो चटकाय	-	झटके से मत तोड़ना, പെട്ടെന്ന് പൊട്ടിക്കരുത്, Don’t break hastily, எளிதில் கக்கூடாது, ಬೇಗನೆ ತುಂಡು ಮಾಡಬಾರದು
टूटे पै	-	टूटने पर
ना जुरे	-	नहीं जुड़ता है
गाँठ	-	കെട്ട്, Knot, முடிச்சு, ಗಂಟು
परी जाय	-	पड़ जाता है

3

कविता

एक तिनका

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

ऐंठ को यहाँ 'बेचारी' क्यों कहा गया है?

'एक तिनका है बहुत तेरे लिए' –यहाँ तिनका क्या-क्या हो सकते हैं?

गतिविधियाँ

» **नमूने के अनुसार कविता की पंक्तियों को बदलकर लिखें।**

» **जैसे :**

• एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।	» मेरी आँख में एक तिनका पड़ा।

» **आशय समझें, सही वाक्य बनाएँ।**

• घमंडी	चुपके से भाग गई।
• तिनका	मुंडेर पर खड़ा था।
• ऐंठ	लाल होकर दुखने लगी।
• आँख	दूर से आकर आँख में पड़ गया।

» **कविता की विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।**

अनुबद्‌ध कार्य

- विश्लेषणात्मक टिप्पणियों का संकलन निकालें।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

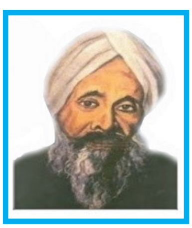

जन्म : 15 अप्रैल 1865
निधन : 16 मार्च 1947

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी कृति 'प्रिय प्रवास' को खड़ी बोली का पहला महाकाव्य कहा जाता है। काव्य के साथ ही उन्होंने गद्य विधा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वैदेही वनवास, रुक्मिणी परिणय आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे 'प्रिय प्रवास' के लिए मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किए गए थे।

मदद लें :

घमंड	-	अहंभाव
ऐंठा हुआ	-	गर्व से भरा हुआ
मुंडेरा	-	Parapet
तिनका	-	सूखी घास का छोटा टुकड़ा
झिझक उठना	-	ഞെട്ടുക, Be startled, திகைத்தல், ಗಾಬರಿಯಾಗು
दुखना	-	दर्द होना
मूंठ देना	-	ചുരുട്ടുക, To roll, சுருட்டு தோல், ಸುತ್ತಿಕೊಳ್ಳು
दबे पाँव भागना	-	चुपके से भागना
किसी ढब से	-	किसी तरह से
समझ	-	विवेक
ताना देना	-	व्यंग्य करना

इकाई : चार

उठती तर्जनी

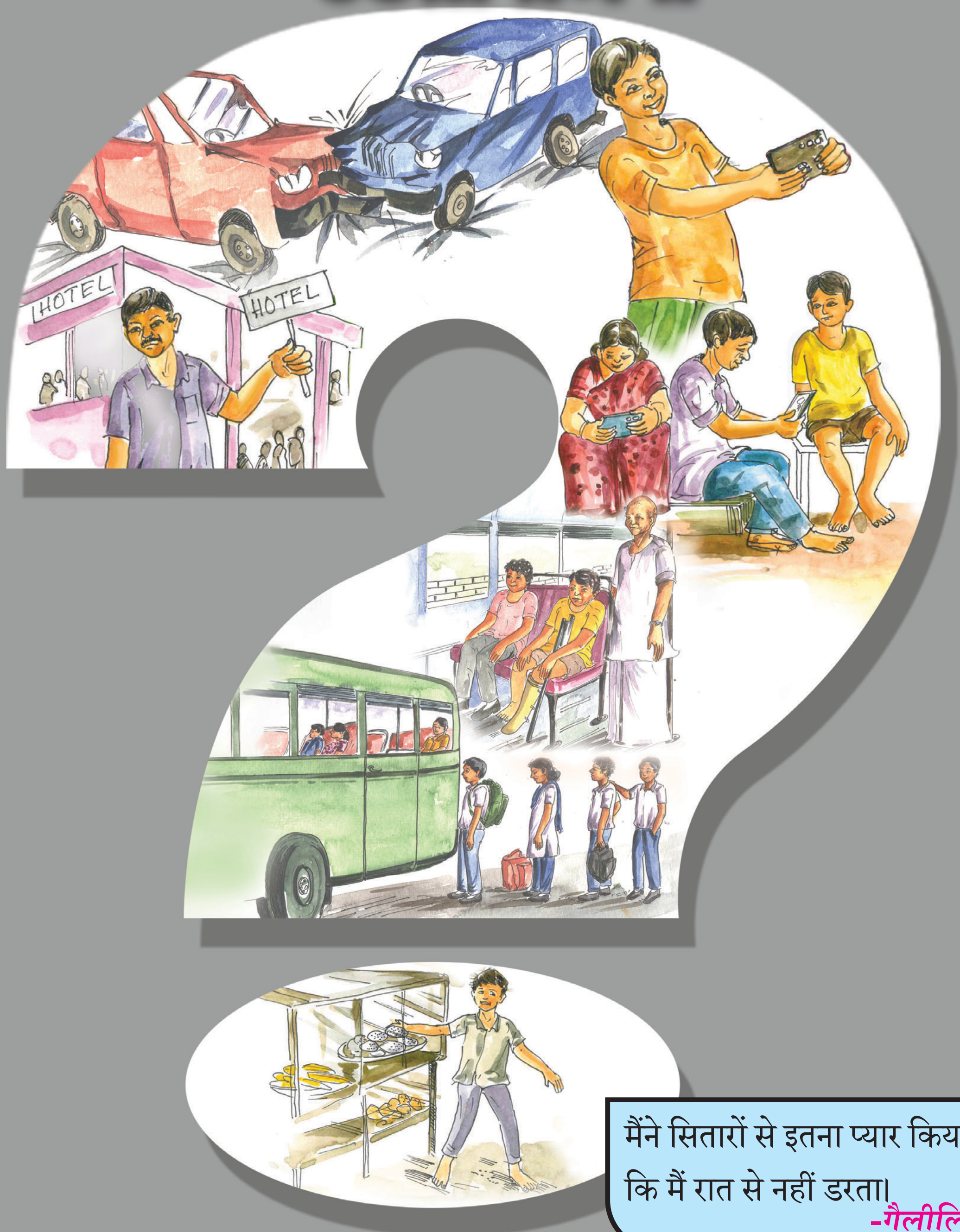

मैंने सितारों से इतना प्यार किया है
कि मैं रात से नहीं डरता।
-गैलीलियो

9

लेख

गैलीलियो

शुक्राचार्य

आज से करीब चार सौ साल पहले की बात है। पूर्णमासी की एक रात थी। बारह साल का एक लड़का चाँद को देखते हुए एक पहाड़ी पर चढ़ रहा था। उसे लगा कि चाँद भी उसके साथ-साथ चढ़ रहा है। उसे बड़ा मज़ा आया। कुछ देर बाद वह चाँद देखते हुए उतरने लगा। अब उसे लगा जैसे चाँद भी उसके साथ-साथ उतर रहा है। उसने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि चाँद अपनी जगह पर स्थिर है और मेरी नज़रें ही धोखा खा रही हैं। लेकिन वह बिना सबूत के कुछ नहीं स्वीकारता था। उसने अपने दोस्त को बुलाया। और उसे

» *'वह बिना सबूत के कुछ नहीं स्वीकारता था।' – लड़के के इस मनोभाव पर अपनी राय प्रकट करें।* • • •

पहाड़ी पर चढ़ने को कहा और खुद उतरने लगा। उसके दोस्त ने कहा, "चाँद तो मेरे साथ-साथ चढ़ रहा था ।" जबकि लड़के को लग रहा था कि चाँद उसके साथ उतर रहा था। उसने नतीजा निकाला कि चाँद स्थिर है उसका चढ़ना-उतरना हमारी नज़रों का धोखा है। उस लड़के का नाम गैलीलियो था। और यह घटना इटली में घटी थी।

कुछ दिनों बाद गैलीलियो को उसके पिता ने डॉक्टरी पढ़ने के लिए भेज दिया। मगर वह तो वैज्ञानिक बनना चाहता था। उसने अपने आप विषय बदल लिए। पिता ने डाँटा तो उसने भोलेपन से कहा, "आप ही तो कहते थे कि सच कहने और सच निभाने में कभी भगवान से भी नहीं डरना चाहिए। मुझे वैज्ञानिक बनने का मन है तो मैं विज्ञान क्यों न पढ़ूँ? क्या आप भगवान से भी बड़े हैं?"

'मुझे वैज्ञानिक बनने का मन है तो मैं विज्ञान क्यों न पढ़ूँ' – गैलीलियो के स्वभाव की कौन-सी विशेषता यहाँ प्रकट होती है?

इसपर पिता नाराज़ होने के बजाय खुश हुए और कहा, "मैं तुमसे यही सुनना चाहता था और इस भावना को हमेशा बनाए रखना। तभी तुम सच्चे वैज्ञानिक बन पाओगे।" गैलीलियो ने पिता की बात को हमेशा याद रखा।

उन दिनों धर्म का बड़ा ज़ोर था। इटली एक ईसाई देश था। हर बच्चे को स्कूल में भी प्रवचन सुनने पड़ते थे। ऐसे ही एक प्रवचन के बीच गैलीलियो की नज़र झूलते हुए फानूस पर पड़ी। वह उसीको टकटकी लगाए देखने लगा। कुछ देर तक देखने के बाद उसे लगा कि फानूस ज़्यादा दूर तक झूले या कम दूर

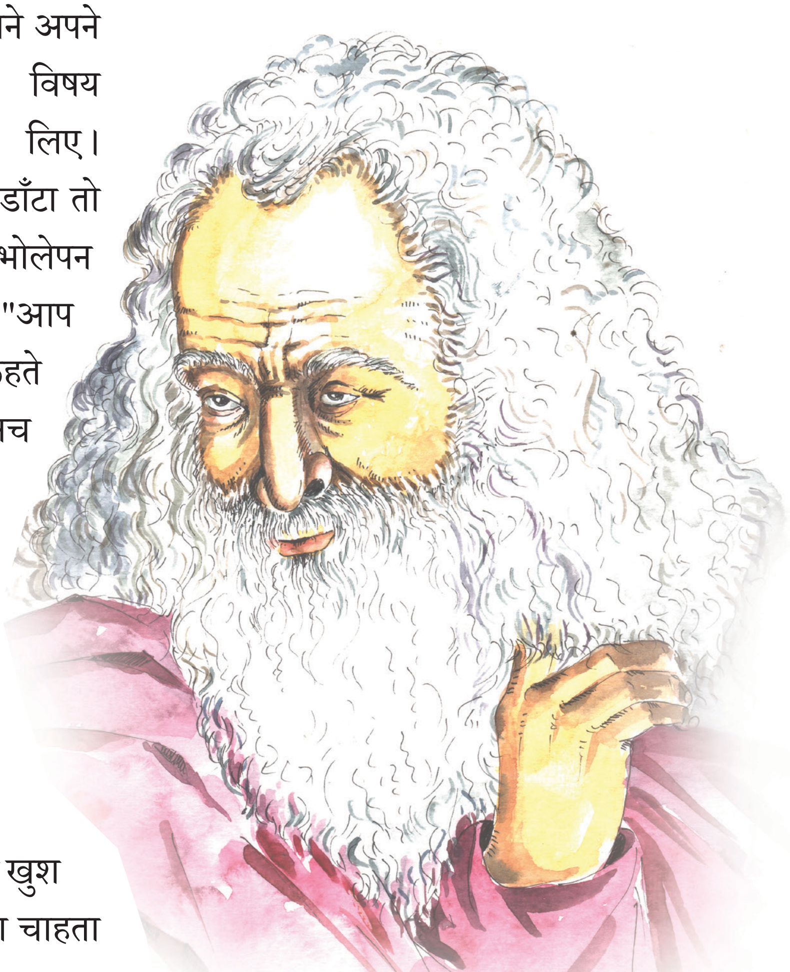

तक, एक से दूसरे किनारे तक आने-जाने में उसे बराबर समय लगता है। उन दिनों घड़ी तो होती नहीं थी। अचानक उसे याद आया कि पिछले दिनों बुखार में उसकी नब्ज़ तेज़ चलने लगी थी। उसने सोचा कि कुदरत से बड़ा कारीगर कौन होगा! अब तो वह ठीक हो चुका है। अब उसकी नब्ज़ ज़रूर सामान्य गति से चल रही होगी। उसका इस्तेमाल घड़ी के रूप में किया जा सकता है। उसने पाया कि उसका नतीजा सही था। अपनी इस खोज पर वह बहुत खुश हुआ। वह दौड़कर अपने एक दोस्त के घर गया। उसने एक डोर और कई धातुओं के गोले लिए। जैसे, लोहा, पीतल, शीशा आदि। इससे उसने पेंडुलम बनाए और कई तजुर्बे किए। उसने पाया कि गोला चाहे किसी भी धातु का हो, पेंडुलम के घूमने के समय पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हाँ, डोर की लंबाई बढ़ाने से उसके झूलने का समय बढ़ता है और घटाने से घटता है। बिना घड़ी के गैलीलियो ने पेंडुलम के ये नियम खोजे थे। आज दुनिया भर की सारी घड़ियाँ पेंडुलम के इन्हीं नियमों के आधार पर बनी हैं।

पुराने ज़माने में समय जानने के लिए लोगों ने क्या-क्या उपाय अपनाए होंगे?

अपने इन तजुर्बों के आधार पर गैलीलियो कहने लगा कि विज्ञान का मतलब प्रयोग है। और जो भी चीज़ या घटना प्रयोग के दौरान माप-तौल, नाप-जोख या गिनती के दायरे के बाहर हो वह विज्ञान नहीं है। गैलीलियो ने पहली बार विज्ञान में गणित या हिसाब का प्रयोग इतना ज़्यादा किया कि लोग उसे 'गैलीलियो हिसाबी' कहने लगे।

'विज्ञान का मतलब प्रयोग है।' –इससे आप क्या समझते हैं?

गैलीलियो ने आगे चलकर ढेर सारी दूसरी खोजें कीं। इनमें पहली दूरबीन भी शामिल है। गैलीलियो ने विज्ञान में प्रयोग तथा गणित को सही जगह देकर खुद आधुनिक या नए विज्ञान की खोज की।

गतिविधियाँ

» **लेख के आधार पर क्रमबद्ध करें :**

प्रसंग
वह अपनी नब्ज का इस्तेमाल घड़ी के रूप में करता है।
विभिन्न धातुओं के गोलों को लेकर प्रयोग करता है।
वह फानूस के झूलने की दूरी और समय के आपसी संबंध को लेकर अनुमान करता है।
वह स्कूल में झूलने वाले फानूस का निरीक्षण करता है।

» **पोस्टर तैयार करें :**

15 फरवरी 'गैलीलियो दिवस' है। मान लें इस अवसर पर आपके स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी होने वाली है। इसके प्रचार के लिए पोस्टर तैयार करें।

» **रेखांकित शब्दों का अर्थ अलग-अलग संदर्भों में समझें और नए वाक्य बनाएँ।**

- कुछ देर बाद चाँद को देखते हुए वह उतरने **लगा**।
- उसे ऐसा **लगा** कि चाँद भी उसके साथ चढ़ रहा था।

» **चर्चा करें।**

- "कुछ दिनों के बाद गैलीलियो को उसके पिता ने डॉक्टरी पढ़ने के लिए भेज दिया। मगर वह तो वैज्ञानिक बनना चाहता था। उसने अपने आप विषय बदल लिए।"

गैलीलियो के निर्णय पर आपका विचार क्या है?

» **गैलीलियो के जीवन एवं दृष्टिकोण की विशेषताएँ क्या-क्या हैं? संकेतों के आधार पर टिप्पणी लिखें।**

- परिसर का निरीक्षण करना।
- सत्य खोजने में सबूतों का आश्रय लेना।
- जीवन में स्वयं निर्णय लेना।
- चुनौतियों को स्वीकार करना।

अनुबद्ध कार्य

» जीवन के कुछ खास अनुभवों पर विश्लेषणात्मक दृष्टि डालने से गैलीलियो कई आविष्कार कर सके। अन्य किसी वैज्ञानिक के जीवन की ऐसी कोई घटना ढूँढ़कर लिखें।

शुक्राचार्य

जन्म : 31 अक्तूबर 1964

'शुक्राचार्य' का असली नाम कृष्ण मेनन है। उनका जन्म बिहार के पटना में हुआ। हमारा सुकरात, बच्चों के लिए गैलीलियो, बच्चों के लिए डार्विन आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

मदद लें :

पूर्णमासी की रात	-	വെളുത്തവാവ് രാത്രി , full moon night, ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ರಾತ್ರಿ பௌர்ணமி இரவு
पहाड़ी	-	पर्वत
मज़ा आना	-	രസിക്കുക, to enjoy, இரசித்தல் ಸಂತೋಷಪಡು
उतरना	-	नीचे की ओर चलना
नज़र	-	दृष्टि
धोखा खाना	-	भ्रमित होना
सबूत	-	തെളിവ്, evidence, சான்று ಸಾಬೀತು
स्वीकारना	-	അംഗീകരിക്കുക, to accept, அங்கீகரித்தல், ಅಂಗೀಕರಿಸು
नतीजा निकालना	-	നിഗമനത്തിൽ എത്തുക, to reach an assumption, முடிவுக்கு வருதல் ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕೆ ಬರು
नज़रों का धोखा	-	കാഴ്ച ഭ്രമം, illusion, ಕಣ್ಣಿನ ತೋರಿಕೆ மாயத்தோற்றம்
घटना(संज्ञा)	-	സംഭവം, incident, நிகழ்வு ಘಟನೆ
घटना(क्रिया)	-	സംഭവിക്കുക, to happen, நிகழ்தல், ಘಟನೆ ನಡೆಯಿತು
वैज्ञानिक	-	ശാസ്ത്രജ്ഞൻ, scientist, அறிவியலாளர், ವಿಜ್ಞಾನಿ
अपने आप	-	स्वयं
बदल लेना	-	മാറ്റുക, to change, மாற்றுதல் , ಬದಲಾಗು
भोलापन	-	നിഷ്കളങ്കത, innocence, களங்கமில்லாத, ನಿಷ್ಕಲಂಕತೆ

सच निभाना	-	सत्य का अनुसरण करना
बनने का मन	-	बनने की इच्छा
के बजाय	-	के बदले
भावना	-	നിലപാട്, **standpoint,** நிலைப்பாடு, ಭಾವನೆ
बनाए रखना	-	നിലനിർത്തുക, **to maintain,** நிலைபெறச்செய்தல், ನೆಲೆನಿಲ್ಲಿಸು
याद रखना	-	स्मरण रखना
धर्म	-	മതം, **religion,** மதம் ಧರ್ಮ
ज़ोर	-	प्रभाव
ईसाई देश	-	देश जहाँ ईसाई धर्म का बड़ा प्रभाव है।
प्रवचन	-	धार्मिक भाषण
झूलना	-	ആടുക , **to swing,**ஆடுதல் ಉಯ್ಯಾಲೆ ಆಡು
फानूस	-	റാന്തൽ,**lantern,** ராந்தல் விளக்கு ಲಾಟೀನು
टकटकी लगाना	-	स्थिर रूप से देखना
किनारा	-	അറ്റം, **from one end to the other,** எல்லை ಒಂದು ಬದಿಯಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ಬದಿಗೆ
बराबर	-	समान
बुखार	-	പനി, **fever,** காய்ச்சல் ಜ್ವರ
नब्ज़	-	नस
कुदरत से बड़ा कारीगर	-	प्रकृति से बड़ा शिल्पकार
ठीक होना	-	സുഖം പ്രാപിക്കുക, **to recover,** நலம் பெறுதல் ಸೌಖ್ಯವಾಗು

सामान्य गति	-	साधारण गति
इस्तेमाल	-	उपयोग
पाना	-	समझना
नतीजा	-	നിഗമനം, **assumption**, முடிவு, ನಿರ್ಧಾರ
खोज	-	കണ്ടെത്തൽ, **finding**, கண்டுபிடித்தல், ಕಂಡುಹಿಡಿಯು
डोर	-	ചരട്, **string**, கயிறு ದಾರ
धातु	-	ലോഹം, **metal**, உலோகம் ಲೋಹ
गोले	-	ഗോളങ്ങൾ, **spheres**, கோளங்கள், ಗೋಲಗಳು
लोहा	-	ഇരുമ്പ്, **iron**, இரும்பு ಕಬ್ಬಿಣ
पीतल	-	പിച്ചള, **brass**, செம்பு, ಹಿತ್ತಾಳೆ
शीशा	-	കണ്ണാടിച്ചില്ല്, **a piece of glass**, கண்ணாடித்துண்டு ಗಾಜಿನ ಚೂರು
पेंडुलम	-	घड़ी का पेंडुलम
तजुर्बा	-	परीक्षण
घूमना	-	ആടുക, **to swing**, ஆடுதல் ಉಯ್ಯಾಲೆ ಆಡು
लंबाई बढ़ाना	-	നീളം കൂട്ടുക, **to increase length**, நீளம் கூட்டுதல், ಉದ್ದವನ್ನುಹೆಚ್ಚುಮಾಡು
घटाना	-	कम करना
घटना	-	कम होना

10

कविता

पैदल चलता हुआ आदमी

स्वप्निल श्रीवास्तव

चमकदार सड़क पर चल रहे कारों
के हुजूम में कितना निरीह दिख रहा है
पैदल चलता हुआ आदमी।

कार में बैठे हुए बड़े लोग उसे
हिकारत से देखते हैं,
जैसे वह किसी दूसरी दुनिया से
आया हुआ आदमी हो।

वे नहीं जानते कि उसके दम पर
उनके चेहरे पर रौनक है।

वह अनाज उगाना बंद कर दें
तो वे भूखों मर जाएँगे,
उनके मकान न बनाए तो उन्हें
सिर छिपाने की जगह नहीं मिलेगी।

उन्हें पता नहीं कि पैदल चलता हुआ आदमी
कितना ताकतवर है,
वह जिस दिन होश में आ जाएगा
उनके साम्राज्य ढह जाएँगे।

पैदल चलने वाला 'निरीह' क्यों लग रहा है?

'हिकारत से देखना' किस मनोभाव की ओर संकेत करता है?

'वह जिस दिन होश में आ जाएगा/ उनके साम्राज्य ढह जाएँगे।' इसपर अपना विचार व्यक्त करें।

गतिविधियाँ

» **कविता के आधार पर लिखें :**

» 'पैदल चलता हुआ आदमी' कौन-कौन हो सकता है?

- अनाज पैदा करने वाला।
- मकान बनाने वाला।
- सफाई करने वाला।

» **समान आशय वाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें :**

- सचेत आम जन में समाज को बदलने की शक्ति है।

- कार में बैठने वाले पैदल चलने वालों को ऐसे देखते हैं कि वे इस समाज के सदस्य नहीं हैं।

- धनी लोग नहीं सोचते कि उनके चेहरों की शोभा मज़दूरों के परिश्रम की देन है।

» **कविता की कौन-सी पंक्ति आपको अच्छी लगी। क्यों?**

» **चर्चा करें :**

- समाज में व्यक्ति का मूल्य कैसे निर्धारित होना चाहिए?
- कविता में सामाजिक असमानताओं के प्रति कवि ने कौन-सा विचार प्रकट किया है?

» **लेख लिखें :**

विषय : 'समाज के निर्माण में आम जन की भूमिका'

अनुबद्‌ध कार्य

- मान लें, सड़क से चलती दूसरी गाड़ी में बैठे हुए दो व्यक्ति सड़क पर चलते हुए आदमी को आदर की दृष्टि से देखते हैं। उन दो व्यक्तियों के बीच की बातचीत लिखें।

स्वप्निल श्रीवास्तव

जन्म : 5 अक्तूबर 1954

स्वप्निल श्रीवास्तव का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। कहानी और संस्मरण के क्षेत्रों में उनका योगदान है। ईश्वर एक लाठी है, ताख पर दियासलाई, मुझे दूसरी पृथ्वी चाहिए आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, फ़िराक पुरस्कार, रूस के अंतर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान आदि से वे पुरस्कृत हैं।

मदद लें :

चमकदार	- തിളങ്ങുന്ന, shining, மின்னுகின்றன, ಹೊಳೆಯುವ,
हुजूम में	- തിരക്കിനിടയിൽ, among the crowd, நெரிசலின் இடையே, ಸಮೂಹಗಳ ನಡುವೆ,
निरीह	- बेचारा
हिकारत	- घृणा
दम	- शक्ति
रौनक	- चमक
अनाज उगाना	- अनाज पैदा करना
सिर छिपाना	- आश्रय पाना
ताकतवर	- शक्तिशाली
होश में आना	- सचेत होना
ढह जाना	- नाश होना

इकाई : पाँच

प्रकाश की ओर

आत्मविश्वास वह शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश किया जा सकता है।

-हेलन केल्लर

1

कहानी

परी लड़की

लॉरी बी फ्रीडमैन

अनुवाद : अरविंद गुप्ता

''**म**हिलाएँ, बच्चे दाईं ओर। पुरुष बाईं ओर।"

जूते बजने लगे। बंदूकें तनने लगीं। आदेश जारी किए गए। चीखें ऊपर उठीं और ठंडी सुबह की हवा में धुएँ के गुबार की तरह गायब हो गईं। मैं अपनी उम्र के हिसाब से काफ़ी ऊँचा था, लेकिन फिर भी मैं ग्यारह साल का एक लड़का था। मैं अपनी माँ के पतले शरीर से लिपट गया। "माँ, मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा" —मैं फुसफुसाया।

पर माँ ने मुझे अपने बड़े भाइयों की ओर धकेल दिया, और वो खुद एक खुली ट्रेन की बोगी की ओर चल पड़ीं। आँखें आगे की ओर। शरीर अकड़ा हुआ। सिर ऊँचा। "हरमन" —माँ ने कहा। "अब समय आ गया है कि तुम्हारे एक आदमी बनने का।"

"अब समय आ गया है कि तुम्हारे एक आदमी बनने का।" —माँ ने ऐसा क्यों कहा होगा?

वह आखिरी बार था जब मैंने अपनी माँ को देखा।

जब मेरी बारी आई, तो मेरी ट्रेन तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। ट्रेन मुझे ले गई। गर्म शरीर, गर्म आँसू, मुझे जकड़ रहे थे। मेरा दिमाग शब्दों से भर गया। माँ।

मैं कहाँ जा रहा हूँ? माँ।

मुझे क्या करना है? माँ।

मेरी देखभाल कौन करेगा? माँ...

मैंने इंतज़ार किया। अपनी माँ के जवाब का इंतजार किया।

जब ट्रेन रुकी, तो गार्ड ने मेरी बाँह पकड़ी। उसने मुझे अंधेरे में उतार दिया। रात की हवा में गोलियों की आवाज़ गूँजने लगी। मेरे कपड़े उतार दिए गए और मेरी तलाशी ली गई। मुझे एक यूनिफॉर्म और काम सौंपा गया।

"बैरक में जाओ" —एक गार्ड चिल्लाया।

मेरे पैर आगे बढ़े। मेरा शरीर आँसुओं से भर गया। मेरे चारों ओर छवियाँ घूम रही थीं। मेरी माँ खाना बना रही थीं। मेरे पिता पियानो बजा रहे थे। मेरा कुत्ता मेरी बगल में लिपटा हुआ था।

मैंने अपने भाई को कसकर पकड़ लिया।

"मैं घर जाना चाहता हूँ।" मेरे भाई ने जवाब दिया, उसकी आवाज़, पतली, सपाट थी। "अब यही घर है।"

> *"अब यही घर है।" –कैदी शिविर को यहाँ घर क्यों कहा गया है?*

कैदी शिविर में मेरे दिन भोर से शुरू होते थे। हम कतार में खड़े होते। मार्च करते। कोई भोजन नहीं। ठंड से कोई सुरक्षा नहीं। केवल काम। मेरे हाथों से खून बहता था। मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ाता था।

पहले, मैंने दिखावा करने की कोशिश की। जब मैं कारखाने में काम करता था, तो मैंने खुद को अपने घर के पास पार्क में खेलने की कल्पना की। जब मुझे भूख लगती, तो मैं अपनी माँ के खाना पकाने की याद करता। जब मुझे ठंड लगती, तो मैं खुद से कहता कि वे सुन्न उँगलियाँ मेरी नहीं बल्कि किसी और की हैं।

रात को मुझे 'सूप' दिया गया। बिलकुल पानी जैसा सूप। मैं एक शेल्फ पर सो गया। मेरा पतला शरीर सैकड़ों लोगों के बीच दबा हुआ था। मुझे घर की

> *हरमन को हमेशा माँ की याद क्यों सताती होगी?*

छोटी-छोटी चीज़ें याद आती रहती थीं। एक तकिया, एक शौचालय, एक टूथब्रश...

बड़ी चीज़ें। माँ। हमेशा माँ।

"माँ" मैं हर रात पूछता था– "तुम मुझे कब सुलाने आ रही हो?" फिर मैं इंतज़ार करता रहता। ठंडा। थका हुआ। भूखा। आशावान। माँ का इंतज़ार करता हुआ।

एक रात, माँ मेरे पास आई। एक सपने में कोमल, निश्चित, स्थिर– "चिंता मत करो, हरमन।" माँ की कोमल आवाज़ ने मुझे सुकून दिया– "एक परी आकर तुम्हें बचाएगी।" दो दिन बाद, वह प्रकट हुई। लड़की परी। परी लड़की। प्रकाशवान। चमकदार, वो बाड़ के दूसरी तरफ़ थी। मैं करीब गया। मेरी परी लड़की असली थी।

"क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है?" –मैं फुसफुसाया। मेरी परी लड़की ने सिर हिलाया। हम देखते रहे, इंतज़ार करते रहे।

एक गलत कदम का मतलब था मौत। मेरी मौत। उसकी मौत। जब सही समय आया, तो उसने बाड़ के पार से एक सेब फेंका।

> *एक गलत कदम का मतलब था मौत। मेरी मौत। उसकी मौत। यहाँ गलत कदम क्यों कहा गया है?*

मेरी उँगलियाँ उस सेब के चारों ओर मुड़ गईं। चुपचाप। कृतज्ञता से। "कल" –परी फुसफुसाई।

मेरी परी लड़की फिर से प्रकट हुई अगले दिन। और उसके बाद हर दिन। वो हमेशा देखती, इंतज़ार करती, और फेंकती थी। हमेशा एक सेब।

परी लड़की और मैं शायद ही कभी बात करते थे। मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता था सिवाय इसके कि वह एक दयालु, बहादुर, खेत में काम करने वाली लड़की थी। उसका नाम क्या था ? वह मेरे लिए अपनी जान जोखिम में क्यों डाल रही थी ?

युद्ध घसीटता चला गया। दिन पर दिन बीते। महीने पर महीने बीते। मेरा शिविर बीमारी और भुखमरी से भर गया। लेकिन मेरी परी लड़की ने मुझे भोजन देकर सहारा दिया। मेरी परी लड़की ने मुझे उम्मीद से भर दिया।

आखिरकार, युद्ध समाप्त हो गया। बहुत से लोग उस दौरान मर गए थे, लेकिन मैं जीवित था। आज़ाद, एकदम मुक्त।

मैं आखिरी बार बाड़ के पास गया। वह वहाँ इंतज़ार कर रही थी।

"तुम मेरी परी लड़की हो" –मैंने कांटेदार तार के बीच से कहा। मैंने अपनी परी लड़की की आँख में एक आँसू देखा।

युद्ध के बाद, मैं अपने भाइयों के साथ इंग्लैंड चला गया, अब मैं कैदी शिविर से मुक्त था लेकिन अब मैं अपने अतीत का कैदी था। मेरे दिमाग में छवियाँ भर गईं। युद्ध। शिविर। माँ। मेरा पुराना जीवन। मेरी परी लड़की।

मैंने काम किया, पढ़ा, अध्ययन किया। मैंने अतीत को पीछे छोड़ने के तरीके खोजने की कोशिश में सालों बिताए।

जब मैं एक जवान आदमी बन गया, तो मैं अमेरिका में एक नए जीवन जीने के लिए चला गया। मैं न्यूयॉर्क पहुँचा। वहाँ सब कुछ नया, अपरिचित था। पुराने जीवन की यादें मेरे चारों ओर लिपटी हुई थीं। उन्होंने मुझे कसकर जकड़ लिया। मैं अक्सर सोचता था कि मैंने क्या पाया और क्या खोया।

'मैंने क्या पाया और क्या खोया।' हरमन ने क्यों ऐसा सोचा होगा?

मैं अक्सर माँ के बारे में सोचता था। एक रात, माँ सपने में मेरे पास आईं। वैसा

ही सपना जो मैंने सालों पहले कैदी शिविर में देखा था।

"चिंता मत करो, हरमन।" –माँ की कोमल आवाज़ ने मुझे शांत किया।

"एक परी तुम्हें बचाएगी।"

दो दिन बाद, एक दोस्त ने मुझे एक दावत पर आमंत्रित किया। वहाँ एक लड़की आएगी। "तुम्हें वो लड़की पसंद आएगी" –उसने डिनर के लिए जाते समय कार में कहा। मुझे वह पसंद आई। एक नर्स, दयालु, होशियार। हरी आँखें, जीवन से भरी हुई।

उनमें कुछ ऐसा था जो मुझे जाना-पहचाना लगा। उसने कहा कि उसका नाम रोमा है। उसने अतीत और युद्ध के दौरान अपने जीवन के बारे में भी बताया। वो एक खेत पर काम करती थी। अपने परिवार की पहचान छिपाने के लिए वो जर्मनी के एक छोटे से गाँव में काम करती थी। मैं उस गाँव को जानता था। "मैं वहाँ एक शिविर में कैदी था," –मैंने रोमा से कहा।

"मैं उस कैंप में एक लड़के के लिए रोज़ाना सेब लेकर जाती थी।" –रोमा ने मुझे बताया कि कैसे वह दिन-ब-दिन, महीने-दर-महीने बाड़ के पास जाती थी।

मैंने कैंप के उस लंबे, दुबले-पतले लड़के के बारे में सोचा, जो मैं खुद कभी था। मैंने अपनी माँ के बारे में भी सोचा, जिसने वादा किया था कि एक परी आकर मुझे बचाएगी।

क्या वो बहुत पहले की मेरी परी लड़की हो सकती है ? डिनर के बाद, रोमा और मैं रेत पर चले। रेत। समुद्र के झाग। डूबता सूरज। मुझे जानना था कि क्या वह वही थी। अनिश्चित। भयभीत। आशावान, स्थायी।

"रोमा..." जिस लड़के के लिए तुम सेब ले गई थी... क्या उस लड़के के आखिरी शब्द थे– "तुम मेरी परी लड़की हो !"

रोमा मुस्कुराई। जैसे ही मैंने उसकी आँखों में देखा, मुझे एक आँसू दिखाई दिया।

"तुम मेरी परी लड़की हो" –मैंने रोमा से धीरे से कहा। "और मैं तुम्हारा लड़का हूँ।"

गतिविधियाँ

» **कहानी के आधार पर लिखें, यह कथन किसका है :**

कथन	पात्र
एक परी आकर तुम्हें बचाएगी।	
मैं एक लड़के के लिए रोज़ाना सेब लेकर जाती थी।	
अब यही घर है।	
तुम्हें वो लड़की पसंद आएगी।	
मैं वहाँ एक शिविर में कैदी था।	

» **कहानी पढ़ें, घटनाओं को क्रमबद्ध करें :**

- परी लड़की से हरमन को मदद मिलती है।
- युवा बनने पर हरमन जीने के लिए अमेरिका चला जाता है।
- युद्ध समाप्त हो जाता है।
- हरमन माँ से अलग होता है।
- परी लड़की को पहचानता है।
- हरमन आखिरी बार बाड़ के पास जाता है।
- हरमन कैदी शिविर में बंदी होता है।
- हरमन भाइयों के साथ इंग्लैंड चला जाता है।
- परी लड़की से पुन: मिलता है।

» **इन मुहावरों को समझें, नए प्रसंग में प्रयोग करें :**

- जान जोखिम में डालना।
- अतीत का कैदी होना।

» **कहानी के आधार पर वाक्य-विस्तार करें :**

- रोमा काम करती थी।

----------------------------------।

---------------------------------------।

---।

--।

» **रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें, अर्थभेद समझें :**

मेरी ट्रेन तेज़ी से आगे <u>बढ़ती थी।</u>	मेरी ट्रेन तेज़ी से आगे <u>बढ़ती है।</u>	मेरी ट्रेन तेज़ी से आगे <u>बढ़ेगी।</u>
पिता पियानो <u>बजाते थे।</u>	पिता पियानो <u>बजाते हैं।</u>	पिता पियानो <u>बजाएँगे।</u>

» **नमूने के अनुसार लिखें :**

----------------------------।	मेरी माँ खाना बनाती है।	--------------------।
मेरे पैर आगे बढ़ते थे।	----------------------------।	--------------------।
----------------------------।	मेरे हाथों से खून बहता है।	--------------------।
वह बाड़ के पास जाती थी।	----------------------------।	--------------------।
----------------------------।	मैं कारखाने में काम करता हूँ।	--------------------।
मैं घर जाना चाहता था।	----------------------------।	--------------------।

» **हरमन के जीवन प्रसंगों से संबंधित वाक्य चुनकर तालिका भरें :**

- हरमन एक नई ज़िंदगी की शुरुआत करने के लिए अमेरिका चला जाता है।
- सैकड़ों लोगों के बीच दबकर सोता है।
- रोमा से सहायता मिलती है।
- हरमन अतीत को भूलने की कोशिश करता है।
- हरमन अकेला और असहाय महसूस करता है।
- रोमा से पुन:मिलन संपन्न होता है।
- कड़ी मेहनत और भूख से रहता है।
- भाइयों के साथ इग्लैंड चला जाता है।

शिविर में	शिविर से छूटने के बाद
हरमन भय और बेचैनी से रहता है।	अतीत का कैदी बनकर रहता है।
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

» **लड़के के चरित्र की विशेषता के अनुसार कहानी से प्रसंग चुनकर लिखें :**

हरमन

प्रसंग	विशेषता
कम उम्र में गंभीर परिस्थितियों का सामना करता है।	अनुभवी
---------------------------	आत्मनिर्भर
---------------------------	कृतज्ञ
---------------------------	भावुक
---------------------------	संघर्षशील

» **हरमन के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।**

अनुबद्ध कार्य

- कहानी के किसी एक प्रसंग पर पटकथा तैयार करें।

लॉरी बी फ्रीडमैन

जन्म : 28 जनवरी 1964

लॉरी फ्रीडमैन एक अमेरिकी लेखिका हैं। आपने युवा पाठकों के लिए 200 से अधिक पुरस्कार-विजेता पुस्तकें लिखी हैं। 'मैलरी मैकडोनाल्ड अध्याय पुस्तक शृंखला', 'मूस द डॉग', 'मैजिक पोस्टकार्ड्स','सिल्ली मिल्ली आसान पाठक शृंखला','द मोस्टली मिजरेबल लाइफ ऑफ अप्रैल', 'सिनक्लेयर किशोर जर्नल-प्रारूप,' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अरविंद गुप्ता

जन्म : 04 दिसंबर 1953

अरविंद गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के बरेली में हुआ। वे भारत के खिलौना आविष्कारक एवं विज्ञान प्रसारक हैं। वे गांधीवादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। वे अध्यापक, इंजीनियर और अनुवादक हैं। उन्होंने 250 से अधिक पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया है। 2018 को भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया।

मदद लें :

परी	- മാലാഖ, angel, தேவதை, ದೇವತೆ
दाईं ओर	- दाए हाथ की दिशा में
बाईं ओर	- बाए हाथ की दिशा में
बंदूकें तनना	- വെടിയുതിർക്കാൻ തയ്യാറാവുക, aiming for firing, துப்பாக்கியைத் சுடுவதற்குத் தயார் செய்தல் , ಗುಂಡುಗಳನ್ನು ಹಾರಿಸಲು ತಯಾರಾಗುವುದು
चीख	- डर जाने पर निकलनेवाली आवाज़
धुएँ के गुबार	- हवा में उड़नेवाली धुआँ
गायब होना	- अप्रत्यक्ष होना
उम्र के हिसाब से	- പ്രായത്തിനനുസരിച്ച്, in accordance with age, வயதிற்கு ஏற்ப , ಪ್ರಾಯಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ
लिपट जाना	- ഒട്ടിച്ചേർന്ന് നിൽക്കുക, to stay closely, அணைந்து நின்றனர் , ಅಂಟಿಕೊಂಡು ನಿಲ್ಲು

फुसफुसाना - धीमे स्वर में कहना

धकेल देना - തള്ളിവിടുക, to push away, தள்ளி விடுதல், ದೂಡಿಬಿಡುವುದು

अकड़ा होना - स्तब्ध होना

जकड़ना - വരിഞ്ഞു മുറുക്കുക, to grasp tightly, இறுகக்கட்டுதல், ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಎಳೆದು ಜೋಡಿಸು

उतार देना - ഇറക്കി വിടുക, to drop off , இறக்கி விடுதல், ಇಳಿಸಿ ಬಿಡು

गूँजना - मुखरित होना

तलाशी लेना - പരിശോധിക്കുക, to check, பரிசோதித்தல், ಹುಡುಕುವುದು

छवियाँ घूमना - ദൃശ്യങ്ങൾ മിന്നി മറയുക, flashing of images, காட்சிகள் மின்னி மறைதல் ,ದೃಶ್ಯಗಳು ಓಡಿಕೊಂಡಿದ್ದವು

कसकर पकड़ना -മുറുകെപ്പിടിക്കുക, to hold tightly , இறுகக் கட்டி அணைத்தான், ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳು

सपाट - വ്യക്തം, clear, தெளிவாக, ವ್ಯಕ್ತ

कैदी शिविर - Jail சிறை

भोर - प्रभात

कतार - श्रेणी

भूख से गुड़गुड़ाना - भूख के कारण पेट से आवाज़ निकलना

दिखावा करना - बनावटी ढंग से प्रस्तुत करना

सुन्न उँगलियाँ - മരവിച്ച വിരലുകൾ, numb fingers, மரத்துப் போன விரல்கள், ಮರಗಟ್ಟಿದ ಬೆರಳುಗಳು

सुकून देना - सांत्वना देना

चमकदार - चमकीला

बाड़ - വേലി, fence, வேலி, ಬೇಲಿ

करीब जाना - पास जाना

सिर हिलाना - തലയാട്ടുക, to nod, தலையை ஆட்டுதல், ತಲೆಯಾಡಿಸು

गलत कदम - തെറ്റായ നീക്കം, wrong move, தவறான போக்கு, ತಪ್ಪಾದ ದಾರಿ,

मुड़ जाना - തിരിയുക, to turn around, திரும்புதல், ತಿರುಗುವುದು

सिवाय - अतिरिक्त

बहादुर - साहसी

जान जोखिम में डालना - साहस दिखाना

घसीटता चला जाना - നീണ്ടു പോവുക, to drag on slowly, நீண்டகாலம் தொடர்தல், ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗು

भुखमरी - भूखों मरने की स्थिति

उम्मीद - प्रतीक्षा

काँटेदार तार - മുള്ളുവേലി, barbed wire, முள்கம்பி வேலி, ಮು ಳ್ಳುತಂತಿಯಬೇಲಿ

छवियाँ भर जाना - ഓർമ്മചിത്രങ്ങൾ നിറയുക, to be filled with memories, ஏராளம் நினைவுகள், ನೆನಪುಗಳು ತುಂಬುವುದು

अतीत - बीता समय

होशियार - चतुर

रोज़ाना - प्रतिदिन

वादा करना - वचन देना

झाग - പത , foam , நுரை, ನೊರೆ

» चित्र का विश्लेषण करें और लिखें, यह किसकी ओर संकेत कर रहा है?

2

कविता

सिला बीनती लड़कियाँ

एकांत श्रीवास्तव

धान-कटाई के बाद
ख़ाली खेतों में
वे रंगीन चिड़ियों की तरह उतरती हैं
सिला बीनने झुंड की झुंड
और एक खेत से दूसरे खेत में
उड़ती फिरती हैं

खाली खेत में लड़कियाँ क्यों आती होंगी ?

दूबराज हो
विष्णुभोग या नागकेसर
वे रंग और खुशबू से
उन्हें पहचान लेती हैं

धान को पहचानने की क्षमता लड़कियों को कैसे मिली होगी ?

दोपहर भर फैली रहती है
पीली धूप में उनकी हँसी
और गुनगुनाहट

उनके बालों में हँसते रहते हैं
कनेर के फूल
और एक गुलाबी रोशनी
उनके चेहरे से फूटकर
फैलती रहती है धरती पर
जब झुकने लगते हैं दिन के कंधे
और उन्हें लगता है कि इतनी
बालियों से हो जाएगा तैयार
एक जून के लिए बटकी भर भात
वे लौट जाती हैं घर

पीली धूप में उनकी हँसी / और गुनगुनाहट –इन पंक्तियों का लड़कियों के जीवन से क्या संबंध है?

जैसे चोंच मारकर उड़ जाने के बाद भी
बहुत देर तक भरा रहता है
पानी में जलपाँखी का संगीत
ख़ाली खेतों में
बहुत देर तक भरा रहता है
उनका होना।

जलपाँखियों के चोंच मारने और लड़कियों के सिला बीनने में क्या संबंध है?

गतिविधियाँ

» **मिलान करें :**

रंगीन चिड़ियाँ	ज़िंदगी का तीखापन
गुलाबी रोशनी	खाने की तलाश
चोंच मारना	फैलती प्रसन्नता
पीली धूप	सिला बीनती लड़कियाँ

» **कविता के आधार पर सही आशय चुनकर लिखें :**

- धान कटाई के समय लड़कियाँ खेत में आती हैं।
- सिला बीनने के लिए लड़कियाँ खेत में आती हैं।
- दोपहर होने पर लड़कियाँ थक जाती हैं।
- लड़कियों के चेहरे की गुलाबी रोशनी धरती पर फैलती है।
- लड़कियाँ धान को पहचानने में असमर्थ होती हैं।
- लौटने के बाद भी खेत में लड़कियों की उपस्थिति भरी रहती है।
- केवल एक जून की बालियाँ लेकर लड़कियाँ घर लौटती हैं।

» **कविता की विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।**

अनुबद्ध कार्य

» **'प्रकाश की ओर'-** इकाई में आप उत्तर जीविता संबंधी रचनाओं से गुज़रे। अपने आसपास की उत्तर जीविता संबंधी झाँकियाँ एकत्रित करें और डिजिटल / चित्र एल्बम तैयार करें।

एकांत श्रीवास्तव

जन्म : 08 फरवरी 1964

एकांत श्रीवास्तव का जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर में हुआ। कविता, निबंध, आलोचना आदि के क्षेत्र में वे प्रसिद्ध हैं। अन्न हैं मेरे शब्द, मिट्टी से कहूँगा धन्यवाद, बीज से फूल तक, पानी भीतर फूल आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। शरद बिल्लौरे सम्मान, रामविलास शर्मा सम्मान, केदार सम्मान आदि से वे पुरस्कृत हैं।

मदद लें :

सिला बीनना	-	നെൽക്കതിർ പെറുക്കിയെടുക്കുക, to pick stalks of rice, நெற்கதிர் பொறுக்குதல் , ಭತ್ತದ ತೆನೆಯನ್ನುಹೆಕ್ಕಿತೆಗೆಯುವುದು
धान-कटाई	-	കൊയ്ത്ത് , harvest , அறுவடை,ಕೊಯ್ಲು

झुंड की झुंड	-	കൂട്ടം കൂട്ടമായി, in groups, கூட்டம் கூட்டமாக, ಗುಂಪು ಗುಂಪಾಗಿ
गुनगुनाहट	-	മൂളിപ്പാട്ട്, humming, வாய்க்குள் பாடுதல் , ಗುನುಗುತ್ತಾಹಾಡುವಹಾಡು
कनेर	-	അരളി, Oleander, அரளி,ಅರಳಿ ಹೂ
दिन के कंधे झुकना	-	सायंकाल होना
बाली	-	ധാന്യക്കതിര്, stalk of grain, தானியக்கதிர்,ಭತ್ತದತೆನೆ
एक जून के लिए	-	एक वक्त के लिए
बटकी	-	छोटा बर्तन
भात	-	उबला चावल
चोंच मारना	-	കൊത്തുക, to peck, கொத் துதல்,ಕುಕ್ಕುವುದು
जलपाँखी	-	ജലപക്ഷി, water bird , நீர்பறவை,ಜಲಪಕ್ಷಿ

भारत का संविधान

भाग 4 क

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य-

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे / बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग हैं– 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं–

- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक**
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक**
- **उत्तर जीवन एवं सर्वांगीण विकास का हक**
- **धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता के परे आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक**
- **मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक**
- **भागीदारी का हक**
- **बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक**
- **बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक**
- **अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक**
- **उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक**
- **मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक**
- **खेलने तथा पढ़ने का हक**
- **सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक**

कुछ दायित्व

- **स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।**
- **स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।**
- **अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।**
- **जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं के परे दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।**

Contact Address:
Kerala State Commission for Protection of Child Rights
'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction
Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone: 0471-2326603
Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in
Website: www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400
Kerala Police Helpline - 0471-3243000/44000/45000

Online R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in